नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 322, नई दिल्ली, बुधवार 21 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिंदगी में कभी भी अपने किसी भी हुनर पर घमंड मत करना, क्योंकि... पत्थर जब पानी में गिरता है तो, अपने ही वज़न से डूब जाता है

03 गुप्त माघ नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं
06 भारत में युवा कॉर्पोरेट पेशेवरों में बढ़ती किडनी स्वास्थ्य चिंताएं
08 फिक्की फ्लो ने 'डेयर टू ड्रीम' के साथ मनाया पुनर्निर्माण का जश्न

दिल्ली परिवहन विभाग: वो सब कर रहा है, जो कोई और नहीं कर सकता- नियम तोड़ना, कानून कुचलना!

संजय कुमार बाठला

दिल्ली की सड़कें जाम, दुर्घटनाओं का अड्डा, हादसों का कब्रिस्तान, असुरक्षा का बाजार और वाहन प्रदूषण का जहर — ये किसी एक व्यक्ति की देन नहीं।

लेकिन अगर सबसे बड़ा दोषी कोई है, तो निश्चित रूप से दिल्ली परिवहन विभाग।

यह विभाग न नीति का पालन करता है, न दिशा-निर्देशों का। नतीजा?

*जनता को समयबद्ध सार्वजनिक परिवहन नहीं,

*खाली सड़कें नहीं,

*बल्कि मजबूरी में असुरक्षित वाहनों में सफर और निजी गाड़ियां खरीदने का बोझ।

सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की धज्जियां उड़ाते हुए यह विभाग प्रदूषण बढ़ाने और ट्रैफिक संकट को गहरा करने का 'सफल' खेल खेल रहा है।

आइए, इस विभाग की इन कारगुजारियों को कठोर नजर से परखें।

* **ई-रिक्शा और ई-कैब पंजीकरण:** सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का अपमान

*दिल्ली परिवहन विभाग 3-पहिया 3-सवारी ई-रिक्शा को बेखौफ पंजीकृत कर रहा है, लेकिन 3-पहिया 6-सवारी इलेक्ट्रिक वाहन को रोक रहा है। यह दोहरा चरित्र क्यों?

*सुप्रीम कोर्ट ने 2016 में TSR (थ्री-व्हीलर स्कूटर रिक्शा) पर पेट्रोल प्रतिबंध लगाया, फिर CNG TSR को 1 लाख तक पंजीकरण की छूट दी (MC Mehta vs. Union of India, WP(C) 13029/1985)। लेकिन इलेक्ट्रिक वाहनों पर कोर्ट ने कोई रोक नहीं लगाई। फिर भी, विभाग एक ऑटो निर्माता कंपनी के 'कैप हटाने' के केस (Bajaj Auto vs. Delhi Govt., SLP pending) के आधे हिस्से को तोड़-मरोड़ कर नए इलेक्ट्रिक TSR और 6-सवारी ई-वाहनों का पंजीकरण रोक रहा है।

***सवाल वाजिब है:** अगर सुप्रीम कोर्ट ने तीन-पहिया पर कैप लगाई है, तो विभाग कैसे ई-रिक्शा, ई-कैब, ग्रामीण सेवा और इको-फ्रेंडली सेवा के नाम पर पंजीकरण कर रहा है? CMVR 1989 (Rule 125) के तहत इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रदूषण-मुक्त माना गया है। GRAP (Graded Response Action Plan) के तहत भी ई-वाहन प्रोत्साहित हैं। लेकिन विभाग कानून दरकिनार कर प्रदूषण भगाने का ढोंग कर रहा है!

विभाग की बेखौफ कारगुजारियां: कानून की खुली अवहेलना

दिल्ली परिवहन विभाग न केवल नीतियां तोड़ रहा, बल्कि सुप्रीम कोर्ट, हाईकोर्ट और मोटर व्हीकल एक्ट की खुलेआम अवहेलना कर रहा है।

यहां मुख्य अपराधों की सूची:

* **6-सवारी ई-वाहन पर रोक, 9-सवारी CNG को छूट:** विभाग के अधिकारी प्रदूषणकारी CNG को खुला खेल दे रहे हैं, जबकि शून्य-उत्सर्जन ई-वाहन रोके हैं। यह Motor Vehicles Act 1988 (Sec 96) का उल्लंघन है।

* **बंद स्लीपर कोच बसों का गुप्त पंजीकरण:** बिना अधिसूचना (Gazette Notification) के विशेषाधिकारियों के लिए पंजीकरण। Delhi Road Safety Policy 2020 की धज्जियां उड़ाईं।

* **अनधिकृत वाहनों का पंजीकरण:** RTO-अनुमोदित सर्टिफिकेट और State Approval की अनदेखी। CMVR Rule 115 का मखौल!

* **TSR स्क्रैपिंग SOP की अवहेलना:** सुप्रीम कोर्ट के Vehicle Scrappage Directive (2021) को ठेंगा दिखाते LOI जारी। पुराने TSR बिना स्क्रैप के नए खरीद!

* **बंद सड़कों पर ई-रिक्शा की छूट:** Delhi HC Order (W.P.(C) 9377/2019) और उपराज्यपाल अधिसूचना के बावजूद अनुमति।

* **अनपंजीकृत ई-रिक्शा सड़कों पर:** बिना लाइसेंस, फिटनेस, इंश्योरेंस (MV Act Sec 66) चलने की खुली छूट। जनता की जान जोखिम में!

* **बाहरी/निजी वाहनों का व्यावसायिक दुरुपयोग:** All India Permit वाले वाहन स्टेज कैरेज की तरह सवारी लाद रहे। Permit Rules 1989 का उल्लंघन।

* **जर्जर वाहनों की सड़कें पर आमद:** टूटे-फूटे वाहनों को Fitness Certificate के बिना छूट (MV Act Sec 56 अवहेलना)।

* **कॉन्ट्रैक्ट कैरेज का स्टेज कैरेजीकरण:** हर जगह सवारी चढ़ाने-उतारने की बेलगाम छूट। Inter-State Permit Rules का अपमान!

ये कारगुजारियां सुप्रीम कोर्ट के Pushpa Case (2011) और Delhi HC E-Rickshaw Guidelines (2022) की खुली अवहेलना हैं।

नतीजा?

*दिल्ली का AQI 400 पार,

*दुर्घटनाएं 20% बढ़ीं (Delhi Police Data 2025), और

*सार्वजनिक परिवहन ध्वस्त!

निष्कर्ष:

*सुधार या न्यायालयीन हस्तक्षेप जरूरी

*दिल्ली परिवहन विभाग वो सब कर रहा—और करवा रहा—जो कोई और नहीं कर सकता: कानून तोड़ना, प्रदूषण बढ़ाना, जनता को ठगना।

*यह विभाग नीति-निर्माता नहीं, अपराधी तंत्र बन चुका है।

*सरकार और सुप्रीम कोर्ट को तत्काल हस्तक्षेप करना चाहिए—ई-वाहनों को खोलें, स्क्रैपिंग लागू करें, और दोषियों पर कार्रवाई करें।

वरना दिल्ली की सड़कें कब्रिस्तान बनी रहेंगी।

दिल्ली-एनसीआर के लोगों को बड़ी राहत, GRAP-4 के प्रतिबंध हटे

रिपोर्ट परिवहन विशेष

दिल्ली-एनसीआर में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) ने ग्रेप-4 के प्रतिबंध तत्काल प्रभाव से हटा दिए हैं। हवा की गुणवत्ता में थोड़ा सुधार होने के बाद यह निर्णय लिया गया है, जिससे लोगों को बड़ी राहत मिली है।

हालांकि, प्रदूषण स्तर को नियंत्रित रखने के लिए ग्रेप-1, 2 और 3 के उपाय अभी भी लागू रहेंगे। दिल्ली का औसत AQI 'बहुत खराब' श्रेणी में है, लेकिन 'गंभीर+' से बाहर आ गया है।

दिल्ली-एनसीआर में ग्रेप-4 के प्रतिबंध हटा दिए गए हैं। GRAP-4 के प्रतिबंध हटने से लोगों को एक बार फिर बड़ी राहत मिली है।

हवा कि गुणवत्ता में थोड़ा सुधार के बाद वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने ग्रेप-4 के प्रतिबंधों को तत्काल प्रभाव से हटाने का निर्णय लिया है।

बता दें कि GRAP के चरण-1, 2 और 3 के उपाय अभी भी लागू रहेंगे, ताकि प्रदूषण स्तर को नियंत्रित रखा जा सके। दिल्ली का औसत AQI 'बहुत खराब' श्रेणी में पहुंच गया है, लेकिन 'गंभीर+' से बाहर आने के कारण यह फैसला लिया गया।

वहीं, दिल्ली-एनसीआर में ग्रेप-4 की पाबंदियों के बीच भी नियमों का खूब उल्लंघन किया जा रहा था। अलग-अलग शहरों से तस्वीरें आ रही थीं, जहां खुलेआम नियमों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं।

ग्रेप-3 के तहत निर्माण और तोड़फोड़ गतिविधियों पर सख्त प्रतिबंध हैं। इसके अलावा बीएस-3 पेट्रोल और बीएस-4 डीजल वाहनों के संचालन पर भी पूरी रोक रहेगी। इन नियमों का उल्लंघन करने वालों पर भारी जुर्माना लगाया जाएगा।

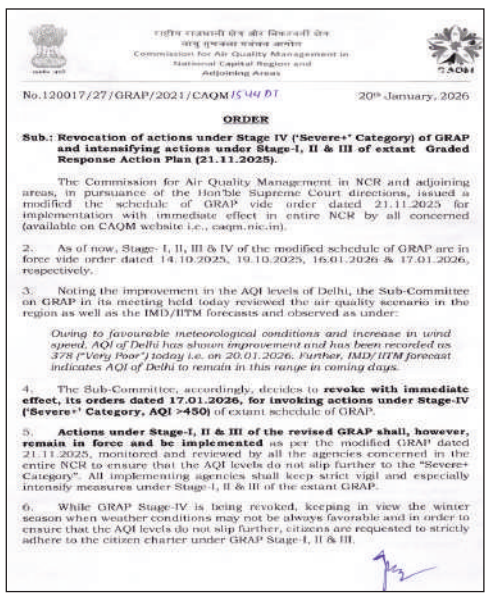

Commission for Air Quality Management in National Capital Region and Adjoining Areas

No.120017/27/GRAP/2021/CAQM/1544 DT — 20th January, 2026

ORDER

Sub.: Revocation of actions under Stage IV ('Severe+' Category) of GRAP and intensifying actions under Stage-I, II & III of extant Graded Response Action Plan (21.11.2025).

The Commission for Air Quality Management in NCR and adjoining areas, in pursuance of the Hon'ble Supreme Court directions, issued a modified the schedule of GRAP vide order dated 21.11.2025 for implementation with immediate effect in entire NCR by all concerned (available on CAQM website i.e., caqm.nic.in).

2. As of now, Stage- I, II, III & IV of the modified schedule of GRAP are in force vide order dated 14.10.2025, 19.10.2025, 16.01.2026 & 17.01.2026, respectively.

3. Noting the improvement in the AQI levels of Delhi, the Sub-Committee on GRAP in its meeting held today reviewed the air quality scenario in the region as well as the IMD/IITM forecasts and observed as under:

Owing to favourable meteorological conditions and increase in wind speed, AQI of Delhi has shown improvement and has been recorded as 378 ("Very Poor") today i.e. on 20.01.2026. Further, IMD/IITM forecast indicates AQI of Delhi to remain in this range in coming days.

4. The Sub-Committee, accordingly, decides to **revoke with immediate effect, its orders dated 17.01.2026, for invoking actions under Stage-IV ('Severe+' Category, AQI >450)** of extant schedule of GRAP.

5. **Actions under Stage-I, II & III of the revised GRAP shall, however, remain in force and be implemented** as per the modified GRAP dated 21.11.2025, monitored and reviewed by all the agencies concerned in the entire NCR to ensure that the AQI levels do not slip further to the "Severe+ Category". All implementing agencies shall keep strict vigil and especially intensify measures under Stage-I, II & III of the extant GRAP.

6. While GRAP Stage-IV is being revoked, keeping in view the winter season when weather conditions may not be always favorable and in order to ensure that the AQI levels do not slip further, citizens are requested to strictly adhere to the citizen charter under GRAP Stage-I, II & III.

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

गौ माता की महिमा

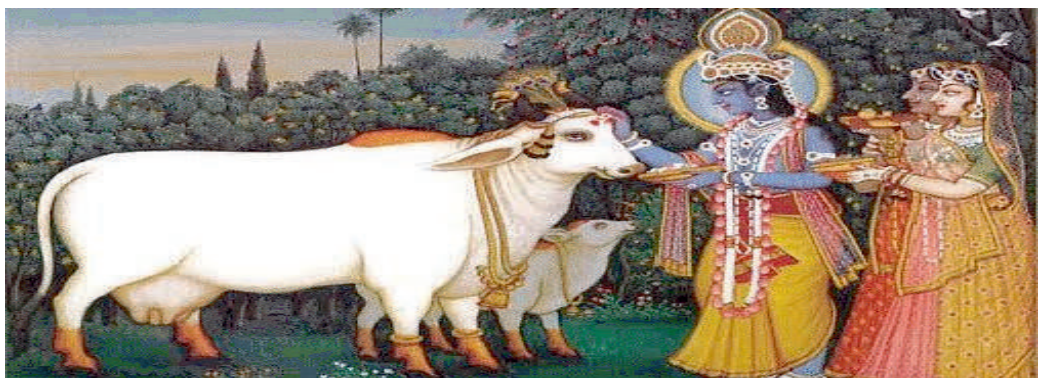

गौ सेवा एक पवित्र कार्य है जो व्यक्ति को भौतिक सुखों के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति और कृष्ण कृपा भी प्रदान करता है।

पिंकी कुंडू

1. प्रत्येक व्यक्ति जन्मतः गो-पुत्र ही है, इसी कारण प्रत्येक का एक गोत्र होता है।

2. प्रत्येक व्यक्ति अपने विवाह हेतु गो-धूलि बेला का ही मंगलमय मुहूर्त चाहता है।

3. प्रत्येक व्यक्ति मृत्यु के उपरान्त गोलोकधाम की कामना करता है; प्रत्येक आत्मा गोलोकवास की अभिलाषी है।

4.प्रत्येक जीव मृत्यु के पश्चात वैतरणी पार करना चाहता है — और इसके लिए मृत्यु से पूर्व गो-दान करता है।

विचार कीजिए! प्रत्येक कामना की पूर्ति के लिए हम गौ-माता का आश्रय लेते हैं, किन्तु उसी गौ-माता की सेवा के लिए हमारे पास समय नहीं होता।

गौ-माता के विषय में ऋषि-मुनि, गोसेवा करने वालों और आम जनमानस के मन में रहने वाले कुछ रोचक तथ्य

जो व्यक्ति श्रद्धा-भाव से गौ-सेवा एवं गौ-पूजन करता है, उसकी समस्त विपदाओं का हरण गौ-माता कर देती हैं।

जिस स्थान पर गौ-माता खड़ी होकर आनन्दपूर्वक श्वास लेती हैं, वहाँ के वास्तु-दोष स्वतः नष्ट हो जाते हैं।

जिस स्थान पर गौ-माता हर्षित होकर रभांती हैं, उस स्थान पर देवी-देवता पुष्पवृष्टि करते हैं।

गौ-माता के गले में घंटी अवश्य बाँधनी चाहिए; उसके निनाद से निरन्तर गौ-आरती सम्पन्न होती रहती है।

गौ-माता के खुरों में नाग-देवता का वास होता है; जहाँ गौ-माता विचरण करती हैं, वहाँ सर्प-बिच्छु नहीं आते।

गौ-माता के गोबर में श्रीलक्ष्मी जी का वास माना गया है।

गौ-माता की एक आँख में सूर्यदेव तथा दूसरी आँख में चन्द्रदेव का वास है।

गौ-माता के दूध में सुवर्ण-तत्त्व पाया जाता है, जो रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

गौ-माता की पूँछ में भी देवता वास करते है; किसी व्यक्ति पर कुदृष्टि होने पर गौ-पूँछ से झाड़ा लगाने से दृष्टिदोष उतर जाता है।

गौ-माता की पीठ पर स्थित उभरे हुए कुबड़ में सूर्य-केतु नाड़ी होती है; प्रतिदिन प्रातः या सायंकाल उस पर 5-10 मिनट, हाथ फेरने से ही हृदय रोग में लाभ होता है।

एक गौ-माता को चारा अर्पित करने से तैंतीस कोटि देवी-देवताओं को भोग लग जाता है।

दूध, दही, घी, गोबर एवं गोमूत्र से निर्मित पंचगव्य से सभी प्रकार की शुद्धि होती है, पंचगव्य के सेवन से असाध्य रोग भी नष्ट हो जाते हैं ऐसी मान्यता है।

जिसकी भाग्य-रेखा सुप्त हो, वह अपनी हथेली में गुड़ रखकर गौ-माता को जीभ से चटवाए; गौ-माता की जीभ से गुड़ चाटे जाने पर सोई हुई भाग्य-रेखा जाग्रत हो जाती है। गौ-माता के चारों चरणों के मध्य से निकलकर परिक्रमा करने से मनुष्य भयमुक्त हो जाता है।

श्रीमद्भागवत अनुसार गौ-माता के गर्भ से ही महान-विद्वान-एवं धर्मरक्षक गौकर्ण जी महाराज का प्राकट्य हुआ था।

गौ-माता की सेवा के निमित्त ही इस धरा पर देवी-देवताओं ने अवतार ग्रहण किए हैं।

गौ-माता द्वारा बछड़े के जन्म के उपरान्त निकाला गया, प्रथम दूध यदि बांझ स्त्री को पिलाया जाए, तो उसका बांझपन दूर हो जाता है।

स्वस्थ गौ-माता का गोमूत्र प्रतिदिन 20 ग्राम, कपड़े से छानकर सेवन करने से समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं।गौ-माता जिस पर वात्सल्य पूर्ण दृष्टि डाल देती हैं, उस पर स्वतः गौ-कृपा हो जाती है।

काली गौ की पूजा करने से नवग्रह शान्त रहते हैं; जो व्यक्ति विधि-पूर्वक धर्मभाव से गौ-पूजन करता है, वह शत्रु-दोषों से मुक्त हो जाता है।

गौ-माता चलता-फिरता मंदिर हैं। सनातन धर्म में तैंतीस कोटि देवी-देवता हैं, प्रतिदिन सभी के दर्शन संभव नहीं, ऐसी मान्यता है कि गौ-दर्शन मात्र से सभी देवी-देवताओं के दर्शन हो जाते हैं।

यदि कोई शुभ कार्य बार-बार प्रयत्न करने पर भी पूर्ण न हो रहा हो, तो उसे गौ-माता के कान में निवेदन करने से वह कार्य सिद्ध हो जाता है।

गौ-माता सर्वसुखों की दात्री हैं।

हे गोमाता !आप अनन्त हैं, आपके गुण भी अनन्त हैं, मुझ में इतना सामर्थ्य नहीं है कि मैं आपके गुणों का पूर्ण वर्णन कर सकूँ।

गौ-सेवा धर्म हमारा

गौ सेवा करने से 33 कोटि देवी-देवताओं की पूजा का फल, धन, पुत्र, विद्या, सुख, शांति, आरोग्य और मोक्ष जैसे अनेक पुण्य प्राप्त होते हैं क्योंकि गाय को सभी देवी-देवताओं का वास स्थान माना जाता है, जिससे उसकी सेवा करने से सभी की आराधना का लाभ मिलता है और जीवन के कष्ट दूर होते हैं।

गौ सेवा से मिलने वाले प्रमुख पुण्य और लाभ:-

देवी-देवताओं की प्रसन्नता: गाय के शरीर में सभी 33 कोटि देवी-देवताओं का वास होता है, इसलिए गौ सेवा से सभी देवता प्रसन्न होते हैं और उनका आशीर्वाद मिलता है।

धन और समृद्धि: गौ सेवा से घर में धन-धान्य, सुख-समृद्धि आती है और आर्थिक परेशानियां दूर होती हैं।

संतान सुख:

धन के साथ-साथ पुत्र प्राप्ति और परिवार में सुख-शांति की प्राप्ति होती है।

ज्ञान और विद्या:

गौ सेवा से व्यक्ति को विद्या और ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे जीवन में सही दिशा मिलती है।

आत्मिक शांति और संतोष: करुणा, शांति और संतोष का भाव बढ़ता है, जिससे आंतरिक प्रसन्नता मिलती है।

पापों का नाश: यह माना जाता है कि गौ सेवा से बड़े से बड़े पाप और कष्ट दूर हो जाते हैं।

मोक्ष की प्राप्ति: धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है, जो अंततः मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है।

आरोग्य और दीर्घायु: गाय का दूध अमृत समान होता है, जो स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है। इससे दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य मिलता है।

कैसे करें गौ सेवा? :

गाय को हरा चारा, रोटी, गुड़ आदि खिलाना।

उन्हें पानी पिलाना।

उनकी पीठ सहलाना और उनका ध्यान रखना।

बीमार गायों का इलाज करवाना और उनकी देखभाल करना।

गौशालाओं में सेवा करना।

संक्षेप में, गौ सेवा एक पवित्र कार्य है जो व्यक्ति को भौतिक सुखों के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति और कृष्ण कृपा भी प्रदान करता है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : म्यूल अकाउंट्स के खिलाफ लड़ाई में रोबोटिक्स

पिंकी कुंडू

रोबोटिक्स, जिसे रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन (RPA), एआई एनालिटिक्स और मशीन लर्निंग से शक्ति मिलती है, म्यूल अकाउंट्स की पहचान और रोकथाम में क्रांति ला रहा है।

म्यूल अकाउंट्स वे अस्थायी बैंक खाते होते हैं जिनका उपयोग अपराधी चोरी या नकली पहचान के जरिए धन शोधन के लिए करते हैं।

ये खाते धोखाधड़ी या हैकिंग से प्राप्त अवैध धन को ग्रहण करते हैं और फिर तेजी से वितरित कर देते हैं।

रोबोटिक्स बैंकिंग को प्रतिक्रियात्मक नुकसान वसूली से सक्रिय रोकथाम की ओर ले जाता है — तेज़ी (रीयल-टाइम मॉनिटरिंग), विस्तार क्षमता (लाखों लेनदेन), और सटीकता (95%+ बनाम मैनुअल 60-70%) प्रदान करता है।

क्यों म्यूल अकाउंट्स फलते-फूलते हैं — और रोबोटिक्स कैसे उन्हें रोकता है

*म्यूल अकाउंट्स धीमी मैनुअल बैंकिंग जांच का फायदा उठाते हैं।

*अपराधी ₹मनी म्यूल्स₹ को जॉब स्कैम या सोशल इंजीनियरिंग के जरिए भर्ती करते हैं।

*वे स्मर्फिंग (कई छोटे ट्रांसफर), अचानक बड़े जमा/निकासी, या सीमा-पार लेनदेन जैसी रणनीतियाँ अपनाते हैं।

*रोबोटिक्स पूरे इकोसिस्टम में सतर्कता को स्वचालित कर इस चक्र को तोड़ देता है।

1. स्वचालित लेनदेन पैटर्न विश्लेषण रोबोटिक सिस्टम लगातार लाल झंडों की तलाश करते हैं

*अचानक बड़े जमा और तुरंत निकासी।

*कई छोटे ट्रांसफर (स्मर्फिंग)।

*संदिग्ध भौगोलिक या सीमा-पार लेनदेन।

RPA तुरंत विसंगतियों को चिन्हित करता है, धीमी मैनुअल समीक्षा को बदल देता है।

*एआई सूक्ष्म पैटर्न पकड़ता है जिन्हें पारंपरिक तरीके चूक जाते हैं (70-80% बच निकलने की दर)।

2. पहचान सत्यापन और KYC स्वचालन KYC को मजबूत करता है:

*दस्तावेज़ स्कैनिंग और धोखाधड़ी पहचान।

*बायोमेट्रिक चेहरा/फिंगरप्रिंट मिलान।

*वैश्विक वॉचलिस्ट से क्रॉस-चेक।

नकली/चोरी हुई पहचान के उपयोग को कम करता है, खाते को शुरुआत में ही रोकता है।

3. लिंक विश्लेषण और नेटवर्क मैपिंग

*एआई धन प्रवाह नेटवर्क को विजुअलाइज़ करता है।

*साझा एंडपॉइंट्स की ओर जाने वाले म्यूल क्लस्टर्स को पहचानता है।

*ग्राफ डेटाबेस के जरिए समन्वित धोखाधड़ी गिरोहों का पर्दाफाश करता है।

4. रीयल-टाइम अकाउंट फ्रीज़िंग

*म्यूल व्यवहार का पता लगाता है और तुरंत गतिविधि रोक देता है।

*चोरी किए गए धन को वितरित होने से पहले रोकता है।

*उदाहरण: 100 म्यूल्स में फैले $1M फ़िशिंग हॉल का 90% रोक देता है।

5. फ़िशिंग और स्कैम प्रतिक्रिया एकीकरण

*फ़िशिंग डिटेक्शन को म्यूल निगरानी से जोड़ता है।

*प्राप्तकर्ता खातों को स्कैन और फ्रीज़ करता है।

*साइबर अपराध से मनी लॉन्ड्रिंग तक की कड़ी को बंद करता है।

6. एटीएम और पेमेंट गेटवे मॉनिटरिंग

*RPA + IoT सेंसर संदिग्ध निकासी को ट्रैक करते हैं।

*रीयल-टाइम में कानून प्रवर्तन को अलर्ट भेजते हैं।

पारंपरिक बनाम रोबोटिक्स-संवर्धित एंटी-म्यूल दृष्टिकोण

चरण पारंपरिक दृष्टिकोण रोबोटिक्स-संवर्धित दृष्टिकोण

पहचान

*संदिग्ध ट्रांसफर की मैनुअल समीक्षा सभी लेनदेन का रीयल-टाइम स्कैन

*सत्यापन मानव-नेतृत्व KYC जांच स्वचालित बायोमेट्रिक और दस्तावेज़ सत्यापन

*नेटवर्क विश्लेषण केवल चिन्हित खातों तक सीमित पूरे लेनदेन नेटवर्क का मानचित्रण

*प्रतिक्रिया विलंबित फ्रीज़िंग तुरंत फ्रीज़ और प्रवर्तन अलर्ट

*विस्तार क्षमता जनशक्ति से सीमित लाखों खातों तक तुरंत विस्तार

वास्तविक कार्यान्वयन कदम

1. RPA बॉट्स तैनात करें: बैंकिंग API से एकीकृत करें।

2. AI एनालिटिक्स लेयर करें: ग्राफ टूल्स से नेटवर्क मैप करें।

3. अनुपालन स्वचालित करें: KYC/बायोमेट्रिक्स जोड़ें।

4. अलर्ट एकीकृत करें: कानून प्रवर्तन के लिए सुरक्षित API।

5. निरंतर सीख सक्षम करें: नए तरीकों पर तिमाही पुनः प्रशिक्षण।

सिद्ध प्रभाव: HSBC/PayPal ने RPA के बाद 40-60% पहचान वृद्धि देखी (2024 FinCEN)।

*भारत में, RBI-NPCI पायलट ने 2023 से ₹500+ करोड़ फ्रीज़ किए।

चुनौतियाँ और समाधान

*चुनौती प्रभाव रोबोटिक समाधान

*गलत सकारात्मक वैध उपयोगकर्ताओं को परेशानी मानव-इन-लूप + ML ट्यूनिंग

*विकसित धोखाधड़ी नियमों को दरकिनार व्यवहारिक बेसलाइन के साथ अनुकूली एआई

नियामक बाधाएँ

*गोपनीयता मुद्दे (DPDP/GDPR) गुमनाम प्रोसेसिंग + ऑडिट

*एकीकरण लागत उच्च प्रारंभिक खर्च क्लाउड RPA (जैसे UiPath)

मुख्य निष्कर्ष रोबोटिक्स बैंकों और प्रवर्तन एजेंसियों को लेनदेन के बीच में ही रोकने की शक्ति देता है, नेटवर्क को बढ़ने से पहले ही रोकता है। यह सक्रिय बढ़त नुकसान को कम करती है और वैश्विक स्तर पर विस्तार योग्य है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

रील एडिक्शनः बच्चों और बड़ों की मानसिक सेहत पर गंभीर असर ?

पूजा
(मानसिक स्वास्थ्य विद्यालय परामर्शदाता)

दिनभर रील्स स्क्रॉल करते हैं तो हो सकती हैं ये गंभीर समस्याएं, मेंटल हेल्थ और स्कूल काउंसलर पूजा से जाने Reels Addiction छुड़ाने के तरीके

भारत में हर स्मार्टफोन यूजर औसतन 2 से 5 घंटे फोन स्क्रीन स्क्रॉल करता है। इसमें करीब 40 मिनट तो सिर्फ रील देखने में ही निकल जाता है। रील की लत लगने पर यह समय 5-6 घंटे का भी हो जाता है। वहीं अगर और गहराई तक जाएं, तो कई रिपोर्ट्स के मुताबिक, 9 से 17 साल के बच्चों के माता-पिता में से 40% ने स्वीकार किया कि उनके बच्चे वीडियो, गेमिंग और सोशल मीडिया के आदी हैं। वहीं 48% युवा खुद को सोशल मीडिया का आदी मानते है। साथ ही तकरीबन 21% बुजुर्गों को ये समस्या है।

रील एडिक्शनः बच्चों और बड़ों की मानसिक सेहत पर गंभीर असर

आज के डिजिटल दौर में सोशल मीडिया हमारी रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन चुका है। खासतौर पर शॉर्ट वीडियो या रील्स ने मनोरंजन को आसान और तुरंत उपलब्ध बना दिया है। लेकिन यही सुविधा धीरे-धीरे एक लत यानी रील एडिक्शन में बदलती जा रही है, जो बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी की मानसिक सेहत को नुकसान पहुंचा रही है।

बच्चों की मानसिक सेहत पर प्रभाव

बच्चों का दिमाग अभी विकसित हो रहा होता है। रील्स का लगातार और जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल उनके ध्यान और व्यवहार पर गहरा असर डालता है। ज़रूरत से ज़्यादा रील्स देखने की वजह से छोटे बच्चे, उम्र से पहले ही बड़ों जैसी बातें और व्यवहार करने लगते हैं। कुछ मामलों में अश्लीलता और गाली-गलौच भी बढ़ी है। बच्चे अधिक चिड़चिड़ापन, गुस्सा और ऑटिज्म के शिकार हो जाते हैं।

युवाओं और बड़ों पर असर

- **एकाग्रता में कमीः** बच्चे लंबे समय तक पढ़ाई या किसी एक काम पर ध्यान नहीं लगा पाते।
- **धैर्य की कमीः** कुछ सेकंड की रील देखने की आदत से बच्चों में धैर्य खत्म होने लगता है।
- **नींद की समस्याः** देर रात तक मोबाइल देखने से नींद पूरी नहीं होती, जिससे चिड़चिड़ापन और थकान बढ़ती है।
- **तुलना और हीन भावनाः** सोशल मीडिया पर दिखने वाली परफेक्ट जिंदगी देखकर बच्चे खुद को कमतर समझने लगते हैं।

रील एडिक्शन सिर्फ बच्चों तक सीमित नहीं है। युवा और वयस्क भी इसके शिकार हो रहे हैं।

- **समय की बर्बादीः** जरूरी काम टलते जाते हैं और उत्पादकता घटती है।
- **चिंता और अवसादः** लाइक्स, व्यूज और कमेंट्स की चिंता मानसिक तनाव बढ़ाती है।
- **रियल लाइफ से दूरीः** परिवार और दोस्तों से बातचीत कम हो जाती है, जिससे अकेलापन बढ़ता है।
- **आत्म-सम्मान पर असरः** दूसरों की उपलब्धियों से तुलना करने की आदत आत्मविश्वास को कमजोर करती है।

मानसिक सेहत क्यों होती है खराब

रील्स दिमाग को तुरंत डोपामिन देती हैं, जिससे दिमाग बार-बार उसी खुशी को पाने के लिए स्क्रॉल करता रहता है। धीरे-धीरे दिमाग को सामान्य चीजों में खुशी मिलनी बंद हो जाती है और व्यक्ति बेचैन, चिड़चिड़ा और तनावग्रस्त रहने लगता है।

सावधानियां जो बच्चों को फोन देते समय अपनाएः

- बच्चों और बड़ों दोनों के लिए स्क्रीन टाइम की सीमा तय करें।
- दिनचर्या में खेल, पढ़ाई और परिवार के साथ समय शामिल करें।
- सोने से पहले मोबाइल का इस्तेमाल न करें।
- बच्चों से खुलकर बात करें और उन्हें डिजिटल दुनिया के फायदे और नुकसान समझाएं।
- जरूरत पड़ने पर मेंटल हेल्थ एक्सपर्ट की मदद लें।

रील्स का एडिक्शन कैसे छोड़ें ?

काम करने के दौरान, मीटिंग में या ड्राइव करते समय फोन का डाटा ऑफ कर दें।

परिवार और दोस्तों के साथ रहें तो डेटा ऑफ रखें और मोबाइल खुद से दूर।

सोते समय फोन बिस्तर से दूर रखें।

सेटिंग्स में जाकर सोशल मीडिया नोटिफिकेशन ऑफ करें।

स्मार्टफोन की बजाय कंप्यूटर का सोशल मीडिया नोटिफिकेशन ही ऑन रखें।

एक तय और निश्चित समय के लिए ही रील्स देखें।

रील्स के एडिक्शन से बचने के लिए खेल, पढ़ाई, म्यूजिक या अन्य एक्टिविटीज में शामिल हों।

अगर रील्स की लत न छूट रही हो तो किसी प्रोफेशनल्स की मदद लें। जो आजकल ऑनलाइन भी आसानी से उपलब्ध हो जाती है।

रील्स अपने आप में बुरी नहीं हैं, लेकिन उनका जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल मानसिक सेहत के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। समय रहते अगर हम जागरूक हो जाएं और संतुलन बनाकर चलें, तो अपनी और आने वाली पीढ़ी की मानसिक सेहत को सुरक्षित रख सकते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य ही असली संपत्ति है, इसे रील्स की लत के हवाले न करें।

अधिक जानकारी के लिए आप हमारे वेबसाइट www.counselling wali .com या, हमसे संपर्क करिए 9716739398 कॉल कीजिए।

आमला गटागट गोलियाँ

पिंकी कुंडू

सामग्रीः

500 ग्राम आमला
250–300 ग्राम चीनी (स्वाद के अनुसार)
1 छोटा चम्मच इलायची पाउडर
1 छोटा चम्मच काला नमक
1 छोटा चम्मच काला जीरा पाउडर (वैकल्पिक)
½ छोटा चम्मच अदरक पाउडर (वैकल्पिक)
2–3 बड़े चम्मच चीनी (कोटिंग के लिए)

बनाने की विधिः

1. आमला तैयार करें

1. आमलों को अच्छी तरह धोकर 4–4 टुकड़ों में काट लें।
2. बीज निकाल दें।
3. एक कड़ाही में पानी उबालें और आमला टुकड़ों को 5–7 मिनट उबालें, ताकि हल्के नरम हो जाएँ।
4. पानी छानकर आमलों को पूरी तरह ठंडा होने दें।

2. चाशनी बनाएं

1. एक पैन में 250–300 ग्राम चीनी और ½ कप पानी डालें।
2. चीनी घुलने तक पकाएँ और 1 तार की चाशनी बना लें। (हल्की गाढ़ी लेकिन बहुत ज्यादा नहीं)

3. आमला मिलाएँ

1. इस चाशनी में उबले हुए आमला टुकड़े डालें।
2. मध्यम आंच पर 8–10 मिनट पकाएँ ताकि चाशनी अंदर तक अच्छे से समा जाए।
3. जब आमला हल्का चमकदार दिखने लगे, तब गैस बंद कर दें।

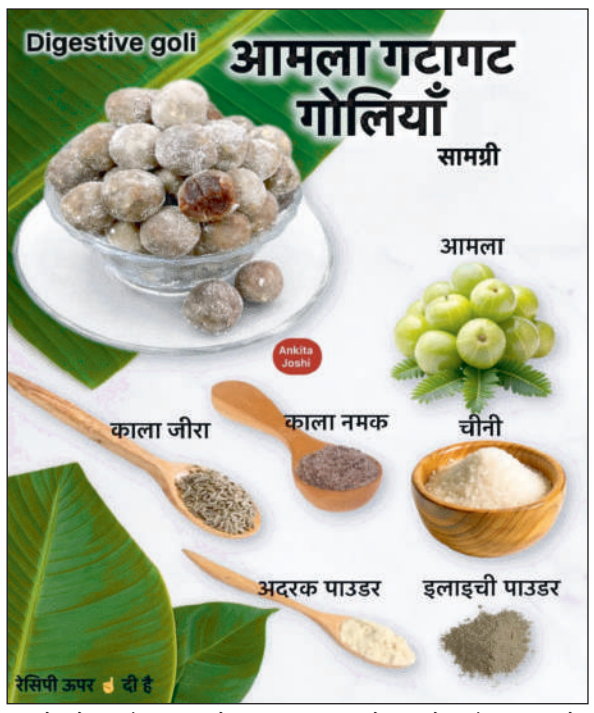

4. मसाला मिलाएँ

1. अब इसमें इलायची पाउडर, काला नमक, काला जीरा पाउडर और अदरक पाउडर डालें।
2. अच्छी तरह मिक्स करें।
3. मिश्रण को पूरी तरह ठंडा होने दें।

5. गटागट गोलियाँ बनाना

1. ठंडे आमला टुकड़ों को 2–3 चम्मच चीनी में टॉस करें ताकि हल्की चीनी कोटिंग आ जाए।
2. अब हर टुकड़े को उँगलियों से हल्का गोल या गोली जैसा आकार दें।
3. इन्हें 4–5 घंटे एयर-ड्राई होने दें।
4. आपकी आमला गटागट गोलियाँ तैयार!

स्टोर कैसे करें ? गोलियों को एयरटाइट जार में रखें। 2–3 महीने तक आराम से चल जाएँगी।

टेस्ट कैसा होगा ?

हल्की खटास
मीठा–चटपटा स्वाद
इलायची और काला नमक का मजेदार फ्लेवर

पेट दर्द बार-बार ? पेचिस ? गैस ?

पिंकी कुंडू

ग्रामीण इंडिया का खास उपाय — चरोटा

शहर की दवा ने धोखा दिया ? एक बार देहात का उपाय ट्राय करो।

Scientific Reason: चरोटा में natural antispasmodic + anti-inflammatory गुण होते हैं।

* यह gut muscles को relax करके cramping और twisting pain को calm करते हैं।

* फाइबर rich होने से पेचिस और loose motion में भी comfort मिलता है।

* स्वाद थोड़ा पनसुत्ते जैसा — पर असर heavy !

Ayurvedic Reason: आयुर्वेद में चरोटा अग्नि दीपक और कफ नाशक — यानि digestion strong + gas कम + पेट दर्द शांत।

Fayde:

* पेट दर्द हल्का
* digestion support
* गैस कम
* पेचिस में आराम
* पेट हल्का और शांत

Nuksan:

* ज्यादा न खाएँ
* dehydration में पानी बढ़ाएँ
* chronic pain में डॉक्टर
* babies में small मात्रा

सुबह उठते ही सिर भारी? बॉडी चलती है लेकिन दिमाग़ अटका हुआ लगता है? नींद खुलती है — पर दिमाग जागता नहीं।

पिंकी कुंडू

Scientific Reason:

* दालचीनी blood vessels को खोलने में support करती है — जिससे सुबह-सुबह धीमा blood flow active होता है।

* शहद brain को gentle glucose energy देता है — जिससे mental fog और heaviness कम होती है।

* दोनों मिलकर circulation + oxygen supply improve करते हैं, और सिर के दबाव जैसा अहसास हल्का महसूस होता है।

*** Ayurvedic Reason:**

* आयुर्वेद में सुबह सिर भारी होना वात + कफ imbalance का संकेत।

* दालचीनी कफ कम करती है - heaviness कम।

* शहद अग्नि बढ़ाता है — sluggishness हटती है।

Fayde (Benefits):

* दिमाग़ clarity मिलती है — subah की सुस्ती टूटती है।

* सिर का दबाव, heaviness और चकराहट कम महसूस।

* mood और alertness बेहतर।

* body active और fresh महसूस।

Nuksan (Harms):

* diabetes में शहद limit — sugar spike हो सकता है।

* दालचीनी ज़्यादा लेने से acidity और जलन।

* सुबह empty stomach बहुत गर्म प्रकृति हो सकती है — पानी ज़रूरी।

सुबह पेट साफ़ नहीं होता? कब्ज रहती है?

पिंकी कुंडू

सोचते हो — कल से ठीक हो जाएगा...
पर पेट रोक देता है दिन की शुरुआत।

Scientific Reason: छुहारे में मौजूद soluble fiber + natural sugars + minerals colon की दीवारों पर पानी खींचकर stool को soft बनाते हैं।

* रात को भिगोने से छुहारा नरम हो जाता है, जिससे सुबह खाते ही आंतें active हो जाती हैं,

* bowel movement smooth और पूरी तरह से होता है।

* Fiber stool को bulky बनाता है, pressure create होता है और

* शरीर आसानी से waste बाहर निकाल देता है — यही कारण है कि पेट हल्का और साफ़ महसूस होता है।

Ayurvedic Reason: आयुर्वेद में छुहारा वात शांत करने वाला माना गया है — और

* कब्ज़ की जड़ ही वात imbalance है।

* भिगोकर खाने से छुहारा ठंडा और सौम्य हो जाता है — जिससे पेट की dryness कम होती है और natural lubrication बढ़ती है।

Fayde (Benefits):

* सुबह स्टूल आसानी से निकलता है — पेट दबाव नहीं बनाता।

* गैस, भारीपन और पेट की जकड़न में आराम मिलता है।

* दिमाग़ हल्का महसूस होता है और दिन energetic शुरू होता है।

* bloating कम होती है, पेट नरम और शांत लगता है।

Nuksan (Harms):

* बहुत ज़्यादा छुहारे loose motion की स्थिति बना सकते हैं।

* zimmedari से खाओ — diabetes वाले sugar spike महसूस कर सकते हैं।

* बहुत गर्म तासीर होने के कारण गर्मियों में मात्रा घटानी चाहिए।

केला + दूध + शहद का मिश्रण पुरुषों की स्टैमिना, ताकत और ऊर्जा बढ़ाने में काफ़ी असरदार माना जाता है।

पिंकी कुंडू

मिश्रण कैसे, कब और क्यों लेना है — सब आसान भाषा में समझे, केला + दूध + शहद से स्टैमिना कैसे बढ़ती है ?

1. ऊर्जा बढ़ाता है

* केला → प्राकृतिक कार्बोहाइड्रेट (तुरंत एनर्जी)

* दूध → प्रोटीन व कैल्शियम (मसल स्ट्रेंथ)

* शहद → नेचुरल शुगर (थकान कम)

इससे शरीर जल्दी थकता नहीं और सहनशक्ति बढ़ती है।

2. मसल रिकवरी बेहतर करता है दूध का प्रोटीन और केले का पोटैशियम एक्सरसाइज़ या मेहनत के बाद मसल्स को जल्दी ठीक करता है

3. हार्मोन बैलेंस में मदद नियमित सेवन से टेस्टोस्टेरोन को सपोर्ट मिलता है, जिससे पुरुष शक्ति में सुधार होता है, सही तरीका (बहुत ज़रूरी)

सामग्री

* 1 पका केला
* 1 गिलास गुनगुना या सामान्य दूध
* 1 चम्मच शुद्ध शहद

बनाने की विधि तीनों को अच्छे से मिक्स करें (ब्लेंडर या हाथ से)

कब लें ? सुबह खाली पेट — सबसे अच्छा या रात को सोने से 1 घंटा पहले

कितने दिन में असर ?

* 7–10 दिन → ऊर्जा में फर्क
* 3–4 हफ्ते → स्टैमिना और ताकत में सुधार

ध्यान रखने वाली बातें

* बहुत ज्यादा शहद न डालें
* बहुत ठंडा दूध न लें
* डायबिटीज़ हो तो डॉक्टर से पूछें

असर और बढ़ाने के लिए

* हफ्ते में 3–4 दिन हल्की एक्सरसाइज़
* पर्याप्त नींद
* तनाव कम रखें

गुप्त माघ नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

पिंकी कुंडू

ज्ञान अथाह है, साधनाए क्रियाएं अनंत है,
किसको पकडे किसको छोड़े मानव मस्तिष्क के समझ के परे है। आज के समय में हर व्यक्ति शार्ट कट चाहता है,
कौनसा देवता जल्दी प्रसन्न होगा इस चक्कर में ही घूमता रहता है।
* मेरा मत है जिसे हृदय से इष्ट माना उसकी ही पूजा करनी चाहिए, और उसी की ही सेवा साधना करना चाहिए
* जिस भी दैवीय शक्ति की आप सेवा और साधना करते है उनका कुछ अंश आपके व्यक्तित्व में शामिल हो ही जाता है, इसलिए साधना भी सोच कर करना चाहिए
* आपका आचार, व्यवहार, व्यक्तित्व, भोजन आदि भी धीरे - धीरे इष्ट के भोग जैसा होने लगता है
अंत में वही एक पुरानी बात
* इष्ट एक गुरु एक गुरुमंत्र एक
* जैसा खाये अन्न वैसा होवे मन,
* जैसा पियो पानी वैसी होवे वाणी ।
सद्कर्म करते हुए एवम अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए समर्पण भाव से सेवा करना ही भक्ति है, सभी जीव धारियों का सम्मान एवम सभी देव शक्तियों में अपने इष्ट के स्वरुप के दर्शन ही सच्ची पूजा है ।।

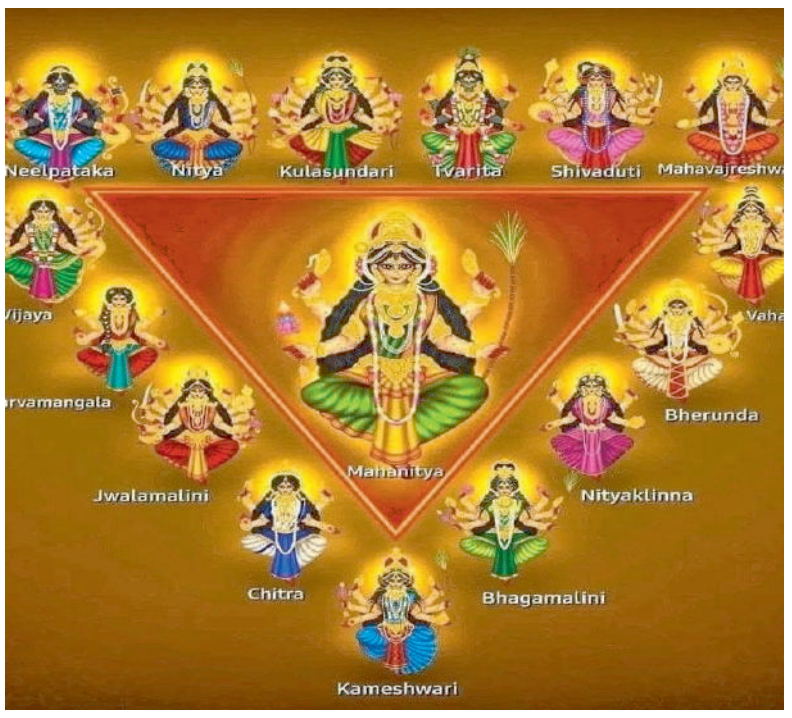

जब इष्ट समाहित होगा तेरे हृदय में प्राणी,, तभी उनके चरणों में होगी अंत गति तुम्हारी।

शक्ति का पर्यायवाची ही ब्रह्म जो विराट शून्य है

पिंकी कुंडू

वेदाऽनुसार
नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं
नासीद्रजो नो व्योमा परो यत।

(ऋग्वेद)

अर्थात - यहाँ न सत, न असत — अर्थात न व्यक्त सत्ता, न अभाव — यही वह शून्य है, जो किसी सीमा में बँधा नहीं, इसीलिए वह शक्ति - अनन्त (अर्थात वह शून्य जो स्वयं का क्षण प्रतिक्षण विस्तारशील है)

नान्तःप्रज्ञं न बहिःप्रज्ञं...

अदृष्टमव्यवहार्यमग्राह्यमलक्षणम्।

(माण्डूक्य उपनिषद्)

यह शून्याऽवस्था न ज्ञेय है, न वर्णनीय —

अर्थात यही वह अज्ञेय पराशक्ति है जिसे शून्य ब्रह्म कहते है।

योग तथा शाक्त मार्गियों के अनुसार — (ब्रह्म ही शक्ति है, और शक्ति ही ब्रह्म)

तन्त्रानुसार —

शून्यं शिवः शिवा काली,
शिवशक्त्यैक्यरूपिणी।

(तन्त्रसार) आदि-काल से ही अधिकांशतः शैव - शाक्तों में परस्पर सुमधुर सामंजस्य रहा है, अतः यहाँ शिव एवं शिवा को एकरूप मानकर शून्य कहा गया है।

तथा —

शिवः शक्त्याविहीनस्तु शव इत्यभिधीयते।

(महानिर्वाण)

शून्य शिव जब तक शक्ति से संयुक्त नहीं होता, तब तक वह निष्क्रिय है। अर्थात शिव जिस शक्ति से संयुक्त होकर सक्रीय होते यही वह अद्याचेतना शक्ति भागती विविध स्वरूपों ईस संसार में लीला करती है।

न शून्यं न च पूर्णं सा,
शून्य-पूर्णस्वरूपिणी।

श्रीभगवती न केवल शून्य है और न ही केवल पूर्ण हम भक्तों की प्राणसुधा जगज्जननी श्रीभगवती तो पूर्ण को शून्य तथा शून्य को पूर्ण करने वाली शून्य - पूर्णस्वरूपिणी है।

श्रीश्री ब्रह्मास्त्रविद्या विजयते

नवदुर्गा की उत्पत्ति – शास्त्रों के अनुसार

पिंकी कुंडू

मार्कण्डेय पुराण (देवी महात्म्य / दुर्गा सप्तशती) के अनुसार — जब महिषासुर नामक असुर ने ब्रह्मा से वरदान प्राप्त कर देवताओं को पराजित कर दिया और तीनों लोकों पर अधिकार कर लिया, तब समस्त देवता अत्यंत व्याकुल होकर एकत्र हुए। तब देवताओं के तेज से आदि शक्ति का प्राकट्य हुआ।

देवी महात्म्य में यह वर्णन इस प्रकार मिलता है —

« ततो देवाः सुरेन्द्राणां तेजोभिरमितौजसः।
एकीकृत्य तदा देवीमजायत महाबला॥"
(देवी महात्म्य, अध्याय 2)

अर्थः तत्पश्चात समस्त देवताओं के अद्भुत और अपरिमित तेज को एकत्र करके एक महान पराक्रमी देवी का प्राकट्य हुआ। वही देवी आदि शक्ति दुर्गा हैं।

शास्त्रों के अनुसार, यही आदि शक्ति समय, कार्य और लीला के अनुसार

नौ भिन्न - भिन्न रूपों में प्रकट हुईं, जिन्हें ही नवदुर्गा कहा गया।

इन नौ रूपों की पूजा नवरात्रि के नौ दिनों में की जाती है, जो शक्ति, तप, साहस, करुणा और धर्म-स्थापना के प्रतीक हैं।

गुप्त नवरात्रि, दस महाविद्याओ की साधना

पिंकी कुंडू

गुप्त नवरात्र के दौरान कई साधक महाविद्या के लिए मां काली, तारा देवी, त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, माता छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, मां धूमावती, माता बगलामुखी, मातंगी और कमला देवी की पूजा करते हैं।

गुप्त नवरात्रि पर्व में माँ दुर्गा जी के दस महाविद्या के सरूप में आराधना की जाती है, समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करने के लिए माँ की गुप्त रूप से साधना होती है, बर्ष में 2 गुप्त नवरात्रि आती है जिनमे साधक तंत्रिक पूजन से भी माँ भगवती की आराधना करके प्रसन्न करते है, अनेक प्रकार की तांत्रिक साधनाये भी की जाती है,

कुछ वैदिक अनुष्ठान से यह कार्य भी लाभदायक रहते हैं जैसे

1. पति प्राप्ति के लिये मन्त्र-

कात्यायनी महामाये महायोगिन्यधीश्वरि ! नंदगोपसुतम् देवि पतिम् मे कुरुते नमः!!

यह मंत्र दुर्गा सप्तशती का संपुटित पाठ किसी योग्य ब्राहमण से करवाऐ माता से प्रार्थना करें हे माँ मै आपकी शरण में आ गयी मुझे शीघ्र अति शीघ्र सौभाग्य की प्राप्ति हो और मेरी मनोकामना शीघ्र पुरी हो माँ भगवती कि कृपा से अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

2. पत्नी प्राप्ति के मंत्र

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम.!!

माँ दुर्गा सप्तशती का संपुटित पाठ किसी योग्य ब्राहमण से करवाऐ आपकी मनोकामना शीघ्र पूरी होगी.!!

3. शत्रु पर विजय ओर शांति प्राप्ति के लिए

सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्.!!

4. बाधा मुक्ति एवं धन-पुत्रादि प्राप्ति के लिएः

सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धन-धान्य सुतान्वितः।
मनुष्यों मत्प्रसादेन भवष्यति न संशय..!!

कन्या विवाहःभ्रम एवं सम्पूर्ण समाधान

पिंकी कुंडू

प्रत्येक माता - पिता अपनी कन्या विवाह के लिए वर की कुंडली से गुण मिलान करते हीं हैं।

कन्या के भविष्य के प्रति चिंतित रहना उनका यह कदम उचित ही है लेकिन इसके पूर्व उन्हें यह भी देखना जरूरी है कि

*कन्या का विवाह किस उम्र में,
*किस दिशा में
*तथा कैसे घर में होगा?
*उसका पति किस वर्ण का
*एवं किस सामाजिक स्तर का होगा?

इस तरह कन्या की जन्म कुंडली से उसके होने वाले पति एवं ससुराल के विषय में सब कुछ स्पष्टतःपता चल सकता है।

ज्योतिष विज्ञान में फलित शास्त्र के अनुसार कन्या की जन्म कुंडली में लग्न से सप्तम भाव को आधार मानकर इस भाव से उसके होने वाले पति का चरित्र, स्वभाव, आर्थिक स्थिति, व्यवसाय या कार्यक्षेत्र, परिवार से संबंध आदि की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

* यथा सप्तम भाव में अगर स्थिर राशि शुभ ग्रह से प्रभावित हो तो लड़की की शादी जन्म स्थान के समीप होगी।

*चर राशि होने की स्थिति में कुछ दूर और

* द्विस्वभाव राशि से शुभाशुभ की स्थिति में नजदिक या दूर शादी होती है।

*सप्तमेश सप्तम भाव से द्वादश भाव के मध्य हो तो शादी विदेश में हो सकती है।

सप्तम भाव के शुभाशुभ के प्रभाव से उसकी शादी कम या अधिक आयु में होती है, इसके अशुभ योग में होने पर उसका ग्रहानिष्ट उपाय भी किए जा सकते हैं।

जहां तक विवाह की दिशा का प्रश्न है, ज्योतिष के अनुसार इसकी जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

जन्मांग में सप्तम भाव में स्थित राशि या ग्रह के आधार पर शादी की दिशा ज्ञात की जाती है।

एक अन्य नियम के अनुसार शुक्र से सप्तम भाव की राशि स्वामी की दिशा में शादी हो सकती है।

पति कैसा मिलेगा कन्या की कुंडली से इसकी भी जानकारी दी जा सकती है,

* यथा सप्तमेश के शुभाशुभ ग्रहयोग और प्रभाव से लड़की का पति सम या बड़ी आयु का होता है।

*सूर्य का प्रभाव हो तो गौरांग, आकर्षक चेहरे वाला,

* मंगल का प्रभाव हो तो लाल चेहरे वाला होगा।

* शनि अगर अपनी राशि का उच्च न हो, तो वर काला या कुरूप तथा कन्या की उम्र से काफी बड़ी आयु वाला होगा,

* शनि उच्च राशि का होने पर पतले शरीर वाला गोरा तथा उम्र में कन्या से 12 वर्ष बड़ा होगा।

पति कितने भाई-बहनों वाला होगा। कन्या की जन्म लग्न कुंडली के नवम भाव, मकान एवं भाग्य तथा नौकरी आजीविका के लिए उसकी जन्म कुंडली के दसम, तृतीय एवं षष्ठ तथा चतुर्थ के बलाबल के आधार पर देखा जा सकता है। स्वामी के स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री होने पर इसमें वृद्धि होती है।

इसी तरह कन्या के जन्म लग्न में द्वितीय भाव उसके पति की आयु देखी जाती है।

* अगर द्वितीयेश शुभ स्थिति में हो या अपने स्थान से द्वितीय स्थान को देख रहा हो, तो पति दीर्घायु होता है।

* अगर द्वितीय भाव में शनि स्थित हो या गुरु सप्तम भाव, द्वितीय भाव को देख रहा हो, तो भी पति की आयु 75 वर्ष की होती है।

इस तरह कन्या की जन्म कुंडली से उसके विवाह, उसमें व्यवधान के साथ दाम्पत्य जीवन की सम्पूर्ण जानकारी देकर बाधक ग्रह योग के सहज उपाय बताए जाते हैं।वशर्ते कि कुण्डली देखने वाला अच्छा दैवज्ञ हो।

"जो त्यागा गया, वही मेरा" और "जो स्वीकार किया गया, वही शक्ति"

पिंकी कुंडू

श्मशान की उस भूमि पर रात उतर चुकी थी। आकाश में पूर्ण चंद्रमा था, चिताएँ जल रही थीं, और धुएँ के बीच मंत्रों की अनुगूँज थी।

वही स्थान, जहाँ संसार की दृष्टि भय देखती है, वहाँ शिव शांति में बैठे थे। भस्म लिप्त शरीर, कंठ में नीलिमा, हाथ में कपाल — वे थे उच्छिष्ट महेश्वर।

उसी समय, जहाँ देवता भी प्रवेश से हिचकते हैं, वहाँ मां मातंगी प्रकट हुईं। ना स्वर्ण सिंहासन, ना राजसी सभा — उनका स्थान था वही जिसे संसार "त्यागा हुआ" कहता है।

हरे–नील हरित वर्ण में, सरल किंतु तांत्रिक वस्त्र धारण किए, माथे पर तेज, और नेत्रों में करुणा। वही थीं — उच्छिष्ट मातंगी।

मां मातंगी ने धीरे से कदम बढ़ाए

और महादेव के समीप आ बैठीं, उनका सिर शिव के कंधे पर टिक गया। दोनों की आँखें बंद थीं। ना शब्द, ना मंत्र, ना विधि — केवल पूर्ण स्वीकार।

चिताओं की अग्नि जल रही थी, पर उस अग्नि में भय नहीं था।

भूत–प्रेत, पिशाच, योगिनियाँ नृत्य नहीं कर रहे थे — वे साक्षी थे।

साक्षी उस सत्य के जहाँ

शिव कहते हैं: "जो त्यागा गया, वही मेरा है।" और

मातंगी उत्तर देती हैं: "जो स्वीकार किया गया, वही शक्ति है।"

तभी श्मशान की भूमि पर एक अद्भुत शांति छा गई। धुएँ में करुणा घुल गई, अग्नि में ज्ञान जाग उठा। वह क्षण था जब अपवित्र भी पवित्र हो गया, और त्यागा हुआ भी दिव्य।

मंदोदरी — वह जो सत्य जानती थी

पिंकी कुंडू

स्वर्णनगरी लंका में मंदोदरी निवास करती थीं — एक ऐसी स्त्री, जिसे शक्ति नहीं,

प्रज्ञा का वरदान प्राप्त था।

उच्च कुल में जन्मी, संयम और करुणा में पली और उस महानता से विवाह बंधन में बँधी जो आगे चलकर भीतर ही भीतर सड़ने वाली थी।

वह रानी बनी — इच्छा से नहीं, भाग्य से।

उनके पति रावण — ज्ञान, तपस्या और पराक्रम में अद्वितीय थे। उनके वेदज्ञान से ग्रंथ भी कांपते थे उनकी तपस्या को देवता भी स्वीकार करते थे।

परंतु मंदोदरी वह देख सकीं जो औरों ने देखने से इनकार कर दिया — कि विनय रहित प्रतिभा विष बन जाती है।

जिस दिन सीता लंका लाई गईं,

उसी दिन से मंदोदरी की रात्रियाँ भारी होने लगीं।

वह स्वर, जिसे कोई सुनना नहीं चाहता था मंदोदरी रावण के पास डरी हुई पत्नी बनकर नहीं, धर्मयुक्त रानी बनकर गईं। "उन्हें लौटा दीजिए," उन्होंने कोमल स्वर में कहा। "अधर्म से प्राप्त विजय इस नगरी को भस्म कर देगी।"

रावण हँस पड़ा, सभासदों ने उसकी स्तुति की, योद्धाओं ने गर्व से वक्ष पीटे, मंत्रियों ने उसे अजेय कहा और केवल मंदोदरी रोईं।

वह सोने से घिरी थीं, फिर भी अनसुनी थीं। मुकुटधारी थीं,फिर भी असहाय। ज्ञानी थीं, फिर भी उपेक्षित — क्योंकि

अहंकार के शासन में सत्य सदा असुविधाजनक होता है।

महल के भीतर का एकांत लंका जगमगाती थी, पर मंदोदरी छायाओं में रहती थीं। उन्होंने माताओं को उन पुत्रों को आशीर्वाद देते देखा जो लौटकर कभी न आएँगे। उन्होंने युद्ध के शंख सुने — और जानती थीं कि हर नाद एक प्रतीक्षित शोकगीत है।

हर रात्रि उन्होंने प्रार्थना की — रावण की विजय के लिए नहीं, उसके जागरण के लिए पर वह जागरण कभी नहीं आया।

वह दिन, जब लंका मौन हो गई जब रणभूमि में रावण गिरा, आकाश ने उत्सव नहीं मनाया। मंदोदरी टूटी हुई लंका के द्वारों से गुज़रीं — चूर-चूर गर्व और मौन अहंकार को पार करती हुई — और अपने पति के निर्जीव शरीर तक पहुँचीं।

उन्होंने न राम को कोसा, न भाग्य को दोष दिया। वह घुटनों के बल बैठीं और रावण के ललाट को स्पर्श किया। "तुमने संसार जीत लिया," उन्होंने फुसफुसाकर कहा, "पर स्वयं को नहीं जीत सके।"

उनके आँसू राक्षसराज के लिए नहीं थे, बल्कि उस मनुष्य के लिए थे जो इतिहास में सबसे महान बन सकता था।

सबसे सच्चा दुःख मंदोदरी जीवित रहीं यही उनका दंड था।

उन्होंने लंका को पुनर्निर्मित होते देखा — बिना उसकी अग्नि, बिना उसके अहंकार, बिना उसकी अमरता की भ्रांति के।

वह इस बात की सजीव स्मृति बनकर रहीं

कि उपेक्षित विवेक अंततः शोक बनकर लौटता है।

* इतिहास रावण के पतन को याद रखता है।

* काव्य सीता के दुःख को स्मरण करता है।

* पर मंदोदरी — मंदोदरी रामायण की मौन त्रासदी हैं — एक ऐसी स्त्री, जिसने आरंभ में ही अंत देख लिया था, और फिर भी उसे हर कदम चलकर पूरा करना पड़ा।

जिले में अवैध कॉलोनियों के खिलाफ तुरंत एक्शन लें अधिकारी : डीसी

"अवैध कॉलोनियों से योजनाबद्ध विकास बाधित, राजस्व को होता है नुकसान"

डिसट्रिक्ट टास्क फोर्स की बैठक में डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल के निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में मंगलवार को डिसट्रिक्ट टास्क फोर्स की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई, जिसमें जिले में अवैध कॉलोनियों के विरुद्ध अब तक की गई कार्रवाई की विस्तृत समीक्षा की गई।

बैठक में उपायुक्त ने अधिकारियों को कड़े निर्देश देते हुए कहा कि अवैध कॉलोनियों को किसी भी परिस्थिति में पनपने न दिया जाए। ऐसी कॉलोनियों की सूचना मिलते ही तुरंत एक्शन लेते हुए अनधिकृत निर्माण को ध्वस्त किया जाए। उन्होंने विभागों को सतत मॉनिटरिंग रखने और किसी भी ढिलाई पर संज्ञान लेने के निर्देश दिए।

डीसी ने कहा कि अवैध कॉलोनियों से न केवल सरकार को राजस्व का भारी नुकसान होता है, बल्कि शहर की योजनाबद्ध विकास प्रक्रिया भी गंभीर रूप से प्रभावित होती है। बैठक में डीटीपी अंजू जून ने आवश्यक जानकारियाँ प्रस्तुत की ।

नागरिकों से अपील — अवैध कॉलोनियों में न खरीदें प्रॉपर्टी

प्रशासन ने आमजन से आह्वान किया है कि वे अवैध कॉलोनियों में प्लॉट या मकान खरीदने से बचें,

क्योंकि भविष्य में उन्हें कानूनी जटिलताओं का सामना करना पड़ सकता है। किसी भी प्रॉपर्टी की खरीद से पहले यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संबंधित कॉलोनी सरकार द्वारा स्वीकृत है या नहीं। इस अवसर पर एसडीएम झज्जर आईएएस अंकित कुमार चौकसे, एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच आईएएस, एसडीएम बादली डॉ रमन गुप्ता, डीआईपीआरओ सतीश कुमार, नप कार्यकारी अधिकारी अरुण नांदल, लोक निर्माण विभाग के कार्यकारी अभियंता सुमित कुमार व अनिल रोहिल्ला, एटीपी सतीश कुमार सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

जिला में उद्यमी फैंडली माहौल बनाएं अधिकारी : डीसी

औद्योगिक मुद्दों के त्वरित समाधान हेतु जिला स्तरीय एकल खिडक़ी प्रणाली पर हुई समीक्षा बैठक

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में उद्योगों से जुड़े मामलों के त्वरित एवं प्रभावी समाधान को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिला स्तरीय एकल खिडक़ी प्रणाली के तहत संयुक्त बैठक लघु सचिवालय स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित की गई। बैठक में मौजूदा औद्योगिक क्षेत्रों में ढांचागत सुविधाओं में सुधार, मूलभूत सुविधाओं में विस्तार, बिजली आपूर्ति, कानून व्यवस्था, विभागों द्वारा जारी की जाने वाली एनओसी सहित अन्य मुद्दोंदों पर विस्तार से चर्चा हुई। डीसी ने कहा कि जिला प्रशासन उद्योगों को बढावा देने हर संभव मदद को तत्पर है। बैठक को सफल बताते हुए उद्यमियों हर माह बैठक करने की मांग डी सी के समक्ष रखी। उन्होंने कहा कि हर माह बैठक आयोजित होगी। बीच में भी किसी प्रकार की समस्या आने पर संबंधित विभाग, संबंधित एसडीएम और उनके संज्ञान में भी ला सकते हैं।

उपायुक्त ने स्पष्ट किया कि प्रस्तावित प्रणाली के माध्यम से उद्योगों की समस्याओं, सुझावों एवं आवश्यक अनुमतियों पर शीघ्र कार्रवाई की जाएगी, जिससे निवेशकों का विश्वास और बढ़ेगा तथा जिले में औद्योगिक विकास को गति मिलेगी। बैठक में उपस्थित अधिकारियों से विभागीय स्तर पर प्रक्रियाओं को उद्यमी फैंडली बनाने तथा पारदर्शिता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

बैठक में कोबी के अध्यक्ष प्रवीण गर्ग, बीसीसीआई उपाध्यक्ष नरेंद्र छिकारा सहित जिला भर के प्रमुख उद्यमियों ने अपनी बात रखी। बैठक में एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच आईएएस, एसडीएम बादली डॉ रमन गुप्ता, जिला उद्योग केंद्र की जीएम संजीत कौर, नप कार्यकारी अधिकारी अरूण नांदल, एसीपी नरेंद्र कुमार सहित एचएसआईआईडीसी, एचएसवीपी, लोक निर्माण विभाग, फायर, डीटीपी सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

इस अवसर पर संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे और उन्होंने एकल खिडक़ी प्रणाली के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर अपने सुझाव प्रस्तुत किए।

"डिजिटल दुनिया का प्रबंधन - साझा करने से पहले सोचें" विषय पर जागरूकता अभियान 22 जनवरी से

सीजेएम एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव विशाल ने दी जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में एमडीडी ऑफ इंडिया और पुलिस विभाग के सहयोग से डिजिटल दुनिया का प्रबंधन - सांझा करने से पहले सोचें विषय पर विशेष जागरूकता अभियान 22 जनवरी से आयोजित किया जा रहा है। यह जानकारी सीजेएम एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव विशाल ने दी।

सीजेएम ने बताया कि यह जागरूकता अभियान गलत सूचना, फर्जी खबरों के प्रसार एवं डिजिटल लत के विरुद्ध जन-जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ बाल विवाह उन्मूलन 2025 की दिशा में आशा जागरूकता, सहायता एवं कार्रवाई की मानक संचालन प्रक्रिया पर केंद्रित रहेगा।

उन्होंने बताया कि अभियान के अंतर्गत (पीएलवी) पैरा लीगल वालंटियर्स द्वारा 22 जनवरी से 28 फरवरी के बीच चिन्हित दिनों में जिले के विभिन्न सरकारी एवं निजी विद्यालयों में आमजन व विद्यार्थियों को जागरूक किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि 22 जनवरी को पैरा लीगल वालंटियर्स कर्मजीत के साथ सामुदायिक सामाजिक कार्यकर्ता संदीप जांगड़ा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय छुछकवास, 23 जनवरी को अब्लेज वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मारौत, 24 जनवरी को मदर इंडिया वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मारौत, 29 जनवरी को लिटल एंजल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय झज्जर, 30 जनवरी को न्यूटन वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय झज्जर, 2 फरवरी को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय डावला, 3 फरवरी को रणबीर सिंह मॉडल स्कूल दरियापुर, 5 फरवरी को एमआर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हसनपुर, 6 फरवरी को एचडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बिरोहड़, 9 फरवरी को संस्कारम वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खातीवास में जागरूकता कैम्पो का आयोजन होगा।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव विशाल ने बताया कि 7 फरवरी को पैरा लीगल वालंटियर्स अन्नू के साथ सामुदायिक सामाजिक कार्यकर्ता संदीप जांगड़ा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय झज्जर, 14 फरवरी को राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय झज्जर, 21 फरवरी को राजकीय वरिष्ठां माध्यमिक विद्यालय बादली, 27 फरवरी को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिकंदरपूर, 28 फरवरी को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जहांगीरपूर में आयोजित शिविरों में विद्यार्थियों को जागरूक करेंगे।

मातृशक्ति उद्यमिता योजना से महिलाओं को बनाया जा रहा आत्मनिर्भर : डीसी

सरकार योजना के तहत महिलाओं को उपलब्ध करवा रही 5 लाख रुपए तक का ऋण

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने पात्र महिलाओं से योजना का लाभ उठाने का किया आह्वान

झज्जर।

हरियाणा सरकार ने महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक तौर पर सशक्त व आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से हरियाणा मातृशक्ति उद्यमिता योजना शुरू की है। योजना के तहत पात्र महिलाओं को बैंकों के माध्यम से 5 लाख रुपए तक का ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा हरियाणा महिला विकास निगम के माध्यम से हरियाणा मातृशक्ति उद्यमिता योजना चलाई जा रही है। योजना के तहत डेयरी, उद्योग विभाग की सूची में शामिल नकारात्मक गतिविधियों तथा केवीआईबी को छोडक़र अन्य सभी गतिविधियां शामिल है। इन गतिविधियों में यातायात वाहन के तहत ऑटो रिक्शा, छोटा सामान ढ़ोने के वाहन, थ्री व्हीलर, ई रिक्शा, टैक्सी, सामाजिक व व्यक्तिगत सेवा गतिविधियों के तहत सैलून, ब्यूटी पार्लर, टेलरिंग, बुटीक, फोटोस्टेट की दुकान, पापड़ बनाना, आचार बनाना, हलवाई की दुकान, फूड स्टाल, आइसक्रीम बनाने की यूनिट, बिस्कुट बनाना, टिफिन सर्विस, मिट्टी के बर्तन आदि बनाने का काम शुरू कर सकती है।

डीसी ने बताया कि योजना का लाभ लेने के लिए महिला की वार्षिक आय पांच लाख रुपए से कम व हरियाणा की स्थायी निवासी होनी चाहिए। ऋण के लिए आवेदक के समय महिला उद्यमी की आयु 18 से 60 वर्ष के बीच होनी आवश्यक है। आवेदक पहले से लिए गए ऋण का डिफाल्टर नहीं होना चाहिए। योजना के तहत समय पर किस्त का भुगतान करने पर तीन वर्षों तक सात प्रतिशत ब्याज अनुदान राशि हरियाणा महिला विकास निगम के माध्यम से दी जाएगी।

आवेदन के लिए आवश्यक दस्तावेज

उन्होंने बताया कि योजना का लाभ लेने के लिए आवेदन पत्र के साथ परिवार पहचान पत्र, आधार कार्ड, पासपोर्ट फोटो, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, ट्रेनिंग प्रमाण पत्र/अनुभव प्रमाण पत्र आदि दस्तावेज शामिल हो तथा सभी दस्तावेजों की दो- दो कॉपी होनी चाहिए। योजना के बारे में अन्य जानकारी के लिए हरियाणा महिला विकास निगम झज्जर कार्यालय से संपर्क कर सकते है।

स्वीकृत कॉलोनियों में ही प्लाट खरीदें नागरिक : डीसी

अवैध कॉलोनी काटने के मामले में परनाला गांव में जिला प्रशासन ने की कार्रवाई

गांव परनाला में संबंधित विभाग ने जारी किए खसरा नंबर, जमीन की खरीद व बिक्री पर लगाई रोक

बहादुरगढ़ (झज्जर) 20 जनवरी। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि बहादुरगढ़ क्षेत्र के गांव परनाला में बगैर लाइसेंस व तय प्रक्रिया पूरी किए अवैध कॉलोनी काटे जाने के मामले में गंभीरता से संज्ञान लेते हुए कार्रवाई की गई है। उन्होंने बताया कि गांव परनाला के किला नंबर 57//15, 58//12,19,20,21/1 में कुछ व्यक्तियों द्वारा बिना लाइसेंस के प्लाट बिक्री की सूचना मिली है। उन्होंने बताया कि उक्त खसरा नंबरों से जुड़े किसी भी प्रकार के सेल-डीड, एग्रीमेंट टू सेल, पावर ऑफ अटॉर्नी या फुल पेमेंट एग्रीमेंट को रजिस्टर्ड करने पर रोक लगाई गई है। डीटीपी विभाग के अनुसार उक्त मामले में न तो विभाग से कोई लाइसेंस, सीएलयू और न ही एनओसी प्राप्त की गई है।

उन्होंने बताया कि बिजली निगम के अधीक्षण अभियंता को उक्त अवैध कॉलोनी में किसी भी प्रकार का बिजली

कनेक्शन जारी न करने के निर्देश दिए गए हैं। वहीं, हरियाणा स्टेट एनफोर्समेंट ब्यूरो के थाना प्रभारी को उक्त साइट पर सख्त निगरानी रखने और किसी भी प्रकार के निर्माण या सड़क नेटवर्क विकसित न होने देने को कहा गया है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि जिले में अवैध कॉलोनियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और आमजन से अपील की है कि वे भू-माफियाओं से बचें । केवल सरकार द्वारा वैध एवं स्वीकृत कॉलोनियों में ही अपना मकान बनाने के लिए प्लाट खरीद सकते हैं। डीसी ने कहा कि जिला प्रशासन अवैध कॉलोनियों को गिराने के लिए निरंतर अभियान चला रहा है।

दुल्हेड़ा में जिला प्रशासन का रात्रि ठहराव, डीसी ने किया जनसंवाद

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़। हरियाणा सरकार की 'रात्रि ठहराव' पहल के तहत सोमवार को दुल्हेड़ा गांव में जिला प्रशासन का रात्रि ठहराव कार्यक्रम आयोजित हुआ। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने गांव के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं और मौके पर ही अधिकारियों को समाधान के निर्देश दिए। इस दौरान जिला प्रशासन के सभी विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। विभागों ने शिविर लगाकर ग्रामीणों को सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी।

रात्रि ठहराव कार्यक्रम में पहुंचने पर डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल का ग्राम पंचायत द्वारा स्वागत किया गया। इसके बाद उपायुक्त ने विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए कैंप का निरीक्षण किया। रात्रि ठहराव कार्यक्रम में सरपंच ने ग्राम पंचायत दुल्हेड़ा की तरफ से और सरपंच छुड़ानी ने अपने गांव का मांग पत्र डीसी के समक्ष पढ़ा। उपायुक्त ने गांव के विकास व उन्नति के लिए समस्याओं को दूर करते हुए सरकारी योजनाओं का लाभ हर पात्र तक सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि ग्रामीण बेझिझक होकर अपनी समस्याओं को जिला प्रशासन के समक्ष रखें। रात्रि ठहराव के दौरान ग्रामीण महिलाओं की भी सक्रिय भागीदारी रही और उन्होंने अपनी समस्याओं के बारे में जिला प्रशासन के अधिकारियों को अवगत करवाया। डीसी ने कहा कि सरकार के दिशा-निर्देशन में जिला प्रशासन जनता की सेवा के लिए तत्पर है। रात्रि ठहराव कार्यक्रम के तहत प्रशासन खुद गांवों में पहुंचकर लोगों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर हल कर रहा है। डीसी ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि हर समस्या का समाधान किया जाएगा और प्रशासन आपके लिए है।

रात्रि ठहराव में ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी, समस्याओं का हुआ मौके पर समाधान

रात्रि ठहराव में ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी रही। ग्रामीणों ने अपनी व्यक्तिगत और सार्वजनिक समस्याएं डीसी के समक्ष रखीं, जिनमें बिजली, सडक़, स्वच्छता, पेयजल, शिक्षा से जुड़ी समस्याएं प्रमुख रहीं। उपायुक्त ने संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि समस्याओं का शीघ्र समाधान किया जाए और ग्रामीणों को योजनाओं का पूरा लाभ मिले। डीसी ने कहा कि

जिन समस्याओं का मौके पर समाधान संभव था उनका किया गया है व अन्य समस्याओं के लिए अधिकारियों को तय समय में समाधान करने के निर्देश दिए गए हैं।

रात्रि ठहराव प्रदेश सरकार का बेहतरीन कार्य

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार ने रात्रि ठहराव कार्यक्रम शुरु किया है जो एक काफी अच्छी पहल है जिससे ग्रामीणों को सीधे जिला प्रशासन से संवाद का बेहतरीन अवसर मिलता है। इस दौरान जो भी ग्रामीणों की समस्याएं दर्ज होती हैं उनका पूरी गंभीरता के साथ समाधान किया जाएगा। रात्रि ठहराव के दौरान शिकायतों की मॉनिटरिंग की जा रही है ताकि ग्रामीणों की संतुष्टि हो। उन्होंने रात्रि ठहराव में मौजूद सभी अधिकारियों को ग्रामीणों की शिकायतों के त्वरित व प्रभावी समाधान के निर्देश दिए।

डीसी ने कहा कि ग्रामीण आपस में मिलजुलकर आपसी भाईचारे के साथ सामाजिक सरोकारों के कार्य करें, आधी समस्याओं का समाधान अपने आप हो जाएगा और युवा पीढ़ी को अच्छे संस्कार मिलेंगे । उन्होंने सभी किसानों से अपनी फॉर्मर आईडी बनवाने का भी आह्वान किया।

युवा नशे से दूर रहें : मिश्रा

डीसीपी मंयक मिश्रा ने कहा कि युवा गांव के विकास में योगदान दें। युवा नशे से दूर रहें व अपने सर्वांगीण विकास पर फोकस करें। युवा खेलों से जुड़े। नशे के जो आदी हैं वह भी नशे को छोडक़र अच्छा नागरिक बन सकता है। उन्होंने कहा कि नशे के बारे में कोई भी ग्रामीण पुलिस को सूचना दे सकते हैं। सूचना देने वाले की पहचान पूरी तरह से गोपनीय रखी जाएगी। उन्होंने कहा कि हमने नशा मुक्त माहौल बनाना है, किसी को सजा देना नहीं। हां, जो लोग नशे का कारोबार करते हैं उनकी सूचना पुलिस को दें ऐसे समाज विरोधी लोगों के साथ पूरी सख्ती से निपटा जाएगा। ग्रामीणों को साइबर क्राइम को लेकर भी जागरूक किया।

विभागों के कैंपों का ग्रामीणों ने उठाया लाभ

दुल्हेड़ा गांव में आयोजित रात्रि ठहराव कार्यक्रम के दौरान जिला प्रशासन ने विभिन्न विभागों के सहयोग से ग्रामीणों को जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर स्वास्थ्य विभाग ने निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया, जिसमें बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने अपनी जांच करवाई।

इसके अलावा, रोडवेज, कृषि एवं किसान कल्याण, जनस्वास्थ्य, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, ग्रामीण विकास, महिला एवं बाल विकास, तथा यूएचबीवीएन सहित कई विभागों ने अपने कैंप लगाए। अधिकारियों ने ग्रामीणों को योजनाओं का लाभ लेने की प्रक्रिया समझाई ।

इस दौरान जिला सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की भजन मंडली ने लोकगीतों के माध्यम से सरकार की योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया।

रात्रि ठहराव के दौरान डीसीपी मंयक मिश्रा, एडीसी जगनिवास , एसडीएम अभिनव सिवाच आईएएस, सीईओ मनीष फोगाट, डीआरओ मनबीर सांगवान, डीडीपीओ निशा तंवर, सीएमओ डॉ मंजु, डीआईपीआरओ सतीश कुमार, बीडीपीओ सुरेंद्र खत्री, दुलेहड़ा बारह के प्रधान उमेद सिंह देशवाल, सरपंच दुल्हेड़ा अमित देशवाल, सरपंच छुड़ानी विनोद कुमार सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

केएमपी एक्सप्रेस-वे से हटाया गया अवैध अतिक्रमण, सड़क सुरक्षा को लेकर प्रशासन सख्त

एसडीएम आईएएस अभिनव सिवाच ने लिया मौके का जायजा, अधिकारियों को दिए जरूरी निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़, 20 जनवरी। सड़क सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए उपमंडल प्रशासन बहादुरगढ़ द्वारा केएमपी एक्सप्रेस-वे पर किए गए अवैध अतिक्रमण को हटाने के लिए सख्त कार्रवाई की गई। यह संयुक्त अभियान ड्यूटी मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में एचएसआईआईडीसी के कार्यकारी अभियंता और पुलिस विभाग की टीमों द्वारा चलाया गया।

अभियान के दौरान केएमपी एक्सप्रेस-वे के आसपास सड़क किनारे किए गए अस्थायी निर्माण, अवैध ढांचे और यातायात में बाधा उत्पन्न करने वाले अतिक्रमण को हटवाया गया। प्रशासन का मानना है कि ऐसे अतिक्रमण न केवल यातायात व्यवस्था को प्रभावित करते हैं, बल्कि सड़क दुर्घटनाओं का भी

बड़ा कारण बनते हैं।

इस मौके पर एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच (आईएएस) ने स्वयं मौके का निरीक्षण किया और संबंधित अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि सड़क सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार की सड़क सुरक्षा नीति के तहत सभी प्रमुख मार्गों को एक्सीडेंट फ्री बनाने के लिए लगातार अभियान चलाया जा रहा है। एसडीएम ने आमजन से भी अपील की कि वे सड़क किनारे किसी भी प्रकार का अवैध अतिक्रमण जैसे की होटल, ढाबा, सहित अतिक्रमण की श्रेणी से जुड़े कार्य न करें और यातायात नियमों का पालन करें। उन्होंने चेतावनी दी कि भविष्य में भी यदि अवैध अतिक्रमण पाया गया तो नियमानुसार सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। प्रशासन की इस कार्रवाई से स्थानीय लोगों और वाहन चालकों ने राहत महसूस की है तथा उम्मीद जताई है कि ऐसे अभियानों से सड़क हादसों में कमी आएगी और यातायात व्यवस्था और अधिक सुचारु होगी। एसडीएम ने कहा कि भविष्य में अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई जारी रहेगी।

एसडीएम आईएएस अभिनव सिवाच ने फॉर्मर आईडी बना रही टीमों को किया प्रोत्साहित

बहादुरगढ़, 20 जनवरी। जिलाभर में डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल के मार्गदर्शन में सरकार के फ्लैगशिप कार्यक्रम एग्री स्टैक फार्मर आईडी को लेकर किसानों में लगातार उत्साह देखने को मिल रहा है। उपमंडल बहादुरगढ़ के किसान न केवल स्वयं बढ़-चढ़कर अपनी फार्मर आईडी बनवा रहे हैं, बल्कि अन्य किसानों को भी इस अभियान से जोड़ने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

अब तक अकेले बहादुरगढ़ उपमंडल में 11 हजार से अधिक किसानों ने फार्मर आईडी जनरेट करवाई है, जिससे वे कृषि से जुड़ी विभिन्न सरकारी योजनाओं, अनुदान और सेवाओं का सीधा लाभ उठा सकेंगे। यह उपलब्धि जिले के अन्य

किसानों के लिए भी एक प्रेरणा स्त्रोत बन रही है।

एसडीएम बहादुरगढ़ आईएएस अभिनव सिवाच ने इस उल्लेखनीय प्रगति पर संबंधित अधिकारियों, कर्मचारियों और किसानों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि एग्री स्टैक फार्मर आईडी किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जिससे कृषि योजनाओं में पारदर्शिता बढ़ेगी और लाभ समय पर किसानों तक पहुंचेगा। उन्होंने सभी किसानों से आह्वान किया कि वे तय समय-सीमा के भीतर अपनी फार्मर आईडी अवश्य बनवाएं।

बहादुरगढ़ प्रशासन द्वारा गांव-गांव जागरूकता शिविर लगाकर किसानों को फार्मर आईडी के लाभ बताए जा रहे हैं। साथ ही, तकनीकी सहायता प्रदान कर मौके पर ही आईडी जनरेट की जा रही है। प्रशासन का लक्ष्य है कि जिले के शत-प्रतिशत पात्र किसानों की फार्मर आईडी तैयार कर उन्हें डिजिटल रूप से सशक्त बनाया जाए।

25 जनवरी को वोटर डे पर दिलाई जाएगी मतदाता जागरूकता शपथ

झज्जर, 20 जनवरी। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार आगामी 25 जनवरी को जिले में राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर मतदान केन्द्र से लेकर खण्ड, विधानसभा एवं जिला स्तर पर मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने बताया कि मतदाता दिवस का उद्देश्य आमजन को मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने तथा मतदान के प्रति जागरूक करना है। इसके तहत जिले के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सहभागिता सुनिश्चित की जा रही है। उन्होंने बताया कि 25 जनवरी को अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मतदाता जागरूकता की शपथ दिलाई जाएगी ।

नागपुर में रोमांचक मुकाबले में भारत ने न्यूज़ीलैंड को हराकर टी20 सीरीज़ में बढ़त बनाई

संगिनी घोष

भारत ने नागपुर के विदर्भ क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में खेले गए पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में न्यूज़ीलैंड को 16 रन से हराकर सीरीज़ में 1–0 की बढ़त हासिल कर ली। उत्साह से भरे दर्शकों के सामने खेले गए इस मुकाबले में भारत ने संतुलित बल्लेबाज़ी और अनुशासित गेंदबाज़ी का शानदार प्रदर्शन किया, जो आने वाली बड़ी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं की तैयारी के लिहाज़ से अहम माना जा रहा है।

पहले बल्लेबाज़ी करते हुए भारत ने 20 ओवर में 6 विकेट पर 178 रन बनाए। पारी की नींव शुभमन गिल ने रखी, जिन्होंने 36 गेंदों में 58 रन की संयमित और आक्रामक पारी खेली। मध्य और अंतिम ओवरों में सूर्यकुमार यादव ने तेज़ 34 रन जोड़कर रन गति को बढ़ाया, जिससे भारत एक मज़बूत स्कोर तक पहुंच सका। पिच पर बल्लेबाज़ों और स्पिनरों दोनों को मदद मिल रही थी, ऐसे में यह स्कोर चुनौतीपूर्ण साबित हुआ।

लक्ष्य का पीछा करते हुए न्यूज़ीलैंड की शुरुआत अच्छी रही, लेकिन मध्य ओवरों में भारतीय गेंदबाज़ों ने मैच का रुख बदल दिया। कुलदीप यादव ने शानदार गेंदबाज़ी करते हुए 3 विकेट 24 रन देकर लिए और अहम साझेदारियां तोड़ीं। अंतिम ओवरों में जसप्रीत बुमराह ने सटीक लाइन-लेंथ के साथ 2 विकेट 27 रन देकर लेकर न्यूज़ीलैंड की उम्मीदों पर रोक लगा दी। हालांकि ग्लेन फिलिप्स ने 45 रन की संघर्षपूर्ण पारी खेली, लेकिन टीम 8 विकेट पर 162 रन ही बना सकी।

मैच के बाद शुभमन गिल ने कहा कि टीम का फोकस "दबाव में शांत रहकर समझदारी से क्रिकेट खेलने" पर था। भारतीय कप्तान ने गेंदबाज़ों की तारीफ़ करते हुए कहा कि अहम मौकों पर योजनाओं का सही तरीके से पालन किया गया। वहीं न्यूज़ीलैंड के कप्तान ने माना कि मध्य ओवरों में विकेट गंवाना उनकी हार का मुख्य कारण रहा, हालांकि उन्होंने अगले मैच में वापसी का भरोसा जताया।

भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच टी20 क्रिकेट में मुकाबले हमेशा कड़े और रोमांचक रहे हैं। घरेलू मैदान पर भारत का रिकॉर्ड मज़बूत रहा है, लेकिन न्यूज़ीलैंड की टीम अक्सर अनुशासित खेल से भारत को कड़ी चुनौती देती आई है। नागपुर का यह मैच भी उसी प्रतिस्पर्धा का एक और उदाहरण रहा।

सीरीज़ में बढ़त बनाने के बाद अब सभी की निगाहें अगले मुकाबले पर हैं, जहां न्यूज़ीलैंड बराबरी की कोशिश करेगा और भारत अपनी लय को बरकरार रखने उतरेगा। पहले मैच ने साफ कर दिया है कि यह टी20 सीरीज़ दर्शकों के लिए बेहद रोमांचक रहने वाली है।

परम ओंकार मंदिर में सप्तदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा 01 फरवरी से

आचार्यश्री पीताम्बर महाराज अपनी सुमधुर वाणी से कहेंगे श्रीमद्भागवत की अमृतमयी कथा

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

मथुरा। टाउनशिप स्थिति ओंकारेश्वर कॉलोनी के परम ओंकार मंदिर में सप्तदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव का आयोजन 01 से 07 फरवरी 2026 पर्यंत अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है।

जानकारी देते हुए कार्यक्रम के संयोजक एवं शब्द सृजन संस्था (पंजी.)के संस्थापक अध्यक्ष, सुप्रसिद्ध साहित्यकार, विश्व रिकॉर्ड धारक डॉ. राजीव कुमार पाण्डेय ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत दोपहर 01 से सायं 05 बजे तक टाउनशिप स्थिति शक्तिधाम मंदिर के अधिष्ठाता व प्रख्यात भागवत प्रवक्ता आचार्यश्री पीताम्बर महाराज अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत की अमृतमयी कथा का रसास्वादन कराएंगे।

इण्टर कालेज, सेरसा के प्रधानाचार्य डॉ. राजीव कुमार पाण्डेय ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ 01 फरवरी को प्रातः 10 बजे निकलने वाली कलश यात्रा के साथ होगा। 04 फरवरी को एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का भी आयोजन हैं जिसमें दिल्ली, गाजियाबाद आगरा, मथुरा आदि स्थानों के श्रेष्ठ कवि गण कविता पाठ करेंगे। इसके अलावा 08 फरवरी को दोपहर 01 बजे पूर्णाहुति एवं भंडारे के साथ महोत्सव का समापन होगा।

महोत्सव की मुख्य आयोजिका श्रीमती उमादेवी पाण्डेय (मैनपुरी), श्रीमती सरस्वती पाण्डेय, संकल्प पाण्डेय, बन्टेश शर्मा, सतेंद्र शर्मा, डॉ. आदर्श धनगर आदि ने सभी से इस महोत्सव में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

न्यू एम्बिशन पब्लिक स्कूल का वार्षिक उत्सव सम्पन्न, बच्चों ने दी मनमोहक प्रस्तुतियां

नृत्य, नाटक और गीतों के माध्यम से बच्चों ने समाज, संस्कृति और बचपन के भावों को किया जीवंत

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर। दीनदयाल कॉलोनी, मंगला स्थित न्यू एम्बिशन पब्लिक स्कूल में वार्षिक उत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर नन्हें-मुन्ने बच्चों ने नृत्य, नाटक एवं गीतों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में पार्षद रमेश पटेल, पूर्व पार्षद श्याम पटेल एवं जीत सिंह विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना से हुई, जिसके बाद बच्चों ने एक से बढ़कर एक रंगारंग प्रस्तुतियां दीं। सोशल मीडिया पर आधारित ड्रामा के माध्यम से बच्चों ने बताया कि किस प्रकार इसका हमारी निजी जिंदगी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और यह हमें अपनों से दूर कर मानसिक तनाव, चिंता और अकेलेपन को बढ़ावा दे रहा है। यह प्रभावशाली प्रस्तुति जतिन हासिका, सिद्धी, दिशू, वैभव और कुनाल द्वारा दी गई।

नर्सरी के बच्चों ने मधुर गीतों पर सुंदर नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लिया। इनमें मानवी, तन्मय, दृष्टि, सौम्या सहित अन्य बच्चे शामिल रहे। वहीं झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के शौर्य और नारी शक्ति को दर्शाता नाटक सिद्धी शर्मा, सुभरत एवं उनके साथियों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

केजी-2 के बच्चों ने "हम तो ऐसे हैं भैया" गीत पर नृत्य कर बचपन की मासूमियत और निश्चिंत जीवन को दर्शाया। इस प्रस्तुति में प्रियांशी, प्रगा, लोकिता, खुशी, तानिया, निहारिका और आज्ञा शामिल रहीं।

कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों की संस्कृति को भी दर्शाया गया। कक्षा दूसरी के बच्चों द्वारा पंजाबी डांस प्रस्तुत किया गया, जिसमें साक्षी, मानस, मुस्कान, राजवीर, सुहानी, अंशिका, पुष्कल और हर्ष शामिल थे। वहीं तमिल डांस की प्रस्तुति हर्ष कुमार, रागिनी, सेजल, मानस, पुष्कल, देवांशी, नौरिन, शिवांश, स्वाती और उमंग ने दी।

कॉमेडी ड्रामा 'हेरा-फेरी' को लवी, खिलेश, सुभरत, आयुष, ऋषभ एवं उनके साथियों ने प्रस्तुत कर दर्शकों को खूब हंसाया। इसके अलावा कक्षा आठवीं के छात्रों द्वारा दोस्ती की अहमियत और आवश्यकता को दर्शाता नाटक प्रस्तुत किया गया, जिसमें प्रिंस, शौर्य, नीता, संगीता, स्वेता सहित अन्य विद्यार्थी शामिल रहे।

कार्यक्रम के समापन पर बच्चों को पुरस्कार वितरित किए गए। इस अवसर पर स्कूल संचालक सुनील उपाध्याय सहित डेविड साहू, पंकज तिवारी, वर्षा उपाध्याय, संजना प्रधान, ममता चौधरी, राजेश्वरी कल्यानी, नेहा सिंह, पिंकी मिश्रा, श्रेया श्रीवास्तव, प्रज्ञा तिवारी, कल्पना ठाकुर, पूजा देवांगन, प्रतिभा चंद्रकांता, किशोरी गुप्ता, स्मिता दिनकर, सुनीति कश्यप एवं संगीता साहू उपस्थित रहीं।

गणतंत्र दिवस 2026 के लिए पैदल यात्रियों की आवाजाही की योजना और परिसर का लेआउट

पिंकी कुंडू

पहचान में आसानी के लिए इस वर्ष बाड़ों का नाम नदियों के नाम पर रखा गया है। सुगम आवागमन और व्यवस्थित प्रवेश के लिए आगंतुकों को निर्धारित मार्गों का अनुसरण करने की सलाह दी जाती है।

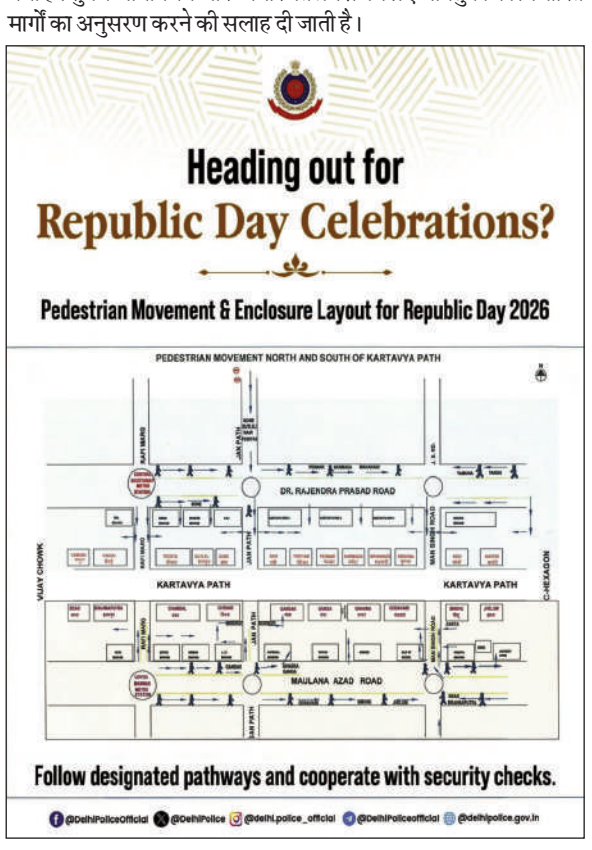

लापरवाही से गाड़ी चलाने के वायरल वीडियो पर एफआईआर दर्ज थाना समयपुर बादली द्वारा, आरोपी गिरफ्तार व गाड़ी ज़ब्त।

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: बीते18.01.2026 को पुलिस अधिकारियों को पता चला कि एक काले रंग की स्कॉर्पियो N गाड़ी, जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर DL-3CDD-5516 है, जिस पर टिंटेड ग्लास लगे थे और जिस पर "दाऊद" नाम लिखा था, उसे बहुत ही लापरवाही और तेज़ी से चलाया जा रहा था। गाड़ी NH-44 / GTK करनाल बाईपास रोड पर नरेला की तरफ़ ज़िग-ज़ैग तरीके से चलती हुई देखी गई, जिससे आम लोगों की सुरक्षा खतरे में पड़ रही थी। मामले की गंभीरता और इंसानी जान को संभावित खतरे को देखते हुए, जानकारी पर तुरंत कार्रवाई की गई। आउटर नॉर्थ जिले के पुलिस स्टाफ ने तुरंत इस गाड़ी को रोका और उसे हिरासत में ले लिया। जांच के दौरान, ड्राइवर की पहचान दाऊद अंसारी, पिता मुसाफिर अंसारी, निवासी जाबिर नगर, ओखला, दिल्ली, उम्र लगभग 21 साल के रूप में हुई। यह भी पता चला कि दोषी गाड़ी का मालिकाना हक उसके पिता मुसाफिर अंसारी के नाम पर है। आरोपी का ड्राइविंग लाइसेंस भी चेक किया गया और रिकॉर्ड में लिया गया। वीडियो फुटेज और सबूतों की जांच के बाद, पुलिस स्टेशन समयपुर बादली, आउटर नॉर्थ जिले में भारतीय न्याय संहिता (BNS), 2023 की धारा 281 और MV एक्ट की धारा 184 के तहत केस FIR नंबर 0063/2026, दिनांक 20.01.2026 दर्ज किया गया। आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। यह घटना 18.01.2026 को दोपहर 03:00 बजे से 04:00 बजे के बीच GTK करनाल बाईपास रोड, दिल्ली की है। दोषी स्कॉर्पियो N गाड़ी को कानून के अनुसार ज़ब्त कर लिया गया है। आगे की जांच जारी है। दिल्ली पुलिस की यह त्वरित कार्रवाई सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने और ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की उसकी दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाती है। नागरिकों से अनुरोध है कि वे सड़कों पर सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए ट्रैफिक नियमों और सड़क सुरक्षा दिशानिर्देशों का पालन करें। किसी भी उल्लंघन पर सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। यह जानकारी(ठरेश्वर स्वामी), आईपीएस डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस, आउटर नॉर्थ डिस्ट्रिक्ट, दिल्ली द्वारा मीडिया को दी गई।

बहुचर्चित गैंगस्टर एक्ट मामले में न्यायालय ने अहम फैसला सुनाते हुए अभियुक्तों को किया दोषमुक्त

इस मामले की पैरवी वरिष्ठ अधिवक्ता अरविन्द कुमार पुष्कर ने की, "बचाव पक्ष के वरिष्ठ अधिवक्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए गंभीर, तथ्यपरक एवं महत्वपूर्ण तर्कों को सुनने के बाद न्यायालय इस निष्कर्ष पर पहुँचा, अभियोजन आरोप सिद्ध करने में असफल रहा।"

आगरा, संजय सिंह। थाना न्यू आगरा क्षेत्र से जुड़े वर्ष 2002 के बहुचर्चित गैंगस्टर एक्ट मामले में न्यायालय ने अहम फैसला सुनाते हुए अभियुक्तों को दोषमुक्त कर दिया। बचाव पक्ष के वरिष्ठ अधिवक्ता अरविन्द कुमार पुष्कर द्वारा प्रस्तुत किए गए गंभीर, तथ्यपरक एवं महत्वपूर्ण तर्कों को सुनने के बाद न्यायालय इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि अभियोजन आरोप सिद्ध करने में असफल रहा।

प्रकरण के अनुसार, बचाव पक्ष के वरिष्ठ अधिवक्ता अरविन्द कुमार पुष्कर ने बताया कि थाना न्यू आगरा, जनपद आगरा की पुलिस द्वारा मुकदमा अपराध संख्या 812/2002 में अभियुक्त बबलू, रमेश उर्फ काके एवं राकेश उर्फ टीटू के विरुद्ध धारा 2/3 उत्तर प्रदेश गिरोहबंद एवं समाज विरोधी क्रियाकलाप निवारण अधिनियम (गैंगस्टर एक्ट) के अंतर्गत आरोप पत्र प्रस्तुत किया गया था। विचारण के दौरान अभियुक्त राकेश उर्फ टीटू की मृत्यु हो जाने के कारण न्यायालय ने दिनांक 07 सितंबर 2017 को उसके विरुद्ध कार्यवाही उपशमित कर दी थी।

श्री पुष्कर ने आगे बताया कि शेष अभियुक्तों के मामले की सुनवाई के उपरांत विशेष न्यायालय ने यह माना कि अभियोजन पक्ष आरोपों को प्रमाणित करने में सफल नहीं रहा। फलस्वरूप, न्यायालय ने अभियुक्त बबलू एवं रमेश उर्फ काके को गैंगस्टर एक्ट की धारा 2 सहपठित धारा 3 के आरोपों से पूर्णतः दोषमुक्त कर दिया।

सरसावा में सनसनी: एक ही परिवार के पांच लोगों के शव बरामद, हत्या-आत्महत्या की आशंका

नईम सागर

सरसावा (सहारनपुर)। कस्बा सरसावा में मंगलवार को उस समय हड़कंप मच गया, जब एक मकान के भीतर एक ही परिवार के पांच लोगों के शव बरामद हुए। सभी मृतकों के सिर में गोली लगने के निशान पाए गए हैं। सूचना मिलते ही पुलिस के आला अधिकारी मौके पर पहुंचे और फॉरेंसिक टीम के साथ जांच शुरू कर दी गई है।

पुलिस के अनुसार मृतक मूल रूप से नकुड़ तहसील क्षेत्र के गांव खारीबांस के निवासी बताए जा रहे हैं। मृतकों में दो महिलाएं, दो स्कूली छात्र और एक पुरुष शामिल हैं। पुरुष की पहचान अशोक के रूप में हुई है, जो नकुड़ तहसील में अमीन के पद पर तैनात था।

मृतकों की पहचान इस प्रकार हुई है

अशोक (अमीन), उनकी पत्नी अजिता, पुत्र कार्तिक, पुत्र देव और माता विद्यावती। बताया जा रहा है कि अशोक ने करीब तीन वर्ष पूर्व अपने पिता सुरेंद्र के स्थान पर अनुकंपा के आधार पर अमीन की नौकरी प्राप्त की थी और वर्तमान में नकुड़ तहसील में कार्यरत था।

शवों के पास मिले तीन तमंचे

पुलिस को घटनास्थल से तीन तमंचे भी बरामद हुए हैं। इसी कारण पुलिस इस मामले को हत्या और आत्महत्या—दोनों बिंदुओं पर जांच रही है। प्रारंभिक जांच में आशंका जताई जा रही है कि परिवार के किसी एक सदस्य द्वारा पहले सभी की हत्या की गई और बाद में स्वयं आत्महत्या कर ली गई, हालांकि पुलिस ने अभी किसी निष्कर्ष की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है।

इलाके में दहशत, जांच जारी

घटना की सूचना मिलते ही क्षेत्र में दहशत का माहौल बन गया। आसपास के लोग बड़ी संख्या में मौके पर जमा हो गए। पुलिस ने मकान को सील कर दिया है और फॉरेंसिक टीम साक्ष्य जुटाने में लगी हुई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और विस्तृत जांच के बाद ही मौत के सही कारणों का खुलासा हो सकेगा।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि हर पहलू को ध्यान में रखकर जांच की जा रही है और मृतक परिवार के रिश्तेदारों व परिचितों से भी पूछताछ की जा रही है। यह घटना पूरे जिले में चर्चा का विषय बनी हुई है।

कानपुर में किशोरी को उठाया, रेप किया और भाग गये, दो की तलाश जारी

सुनील बाजपेई, कानपुर। यहां की लड़कियों पर दरिंदों का हमला लगातार जारी है। वे उन्हें सरेआम उठाते हैं। सामूहिक रूप से बलात्कार करते हैं और फिर भाग जाते हैं। ऐसी ही एक घटना बिल्हौर थाना क्षेत्र में हुई। यहां बीती रात करीब 10 बजे शौचालय गई 13 वर्षीय किशोरी को गांव के दो युवकों ने दबोच लिया। इसके बाद उसे पास के ही एक मकान में ले जा कर दुष्कर्म किया। आज मंगलवार भोर करीब तीन बजे किशोरी बदहवास रोती हुई घर पहुंची और परिजनों को घटना की जानकारी दी। जिसके बाद पुलिस रिपोर्ट दर्ज करके आरोपियों की तलाश कर रही है।

प्राप्त विवरण केमुताबिक गांव निवासी दो युवकों ने सोची समझी साजिश के तहत पड़ोसी की एक किशोरी को उस समय अपहृत कर लिया, जब वह सोमवार रात घर से बाहर बने शौचालय पहुंची। पीड़ित किशोरी के पिता ने गांव के ही दो युवकों को विरुद्ध कोतवाली बिल्हौर में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। दोनों युवक एक ही बिरादरी के बताए गए हैं। सामूहिक दुष्कर्म की घटना के बाद गांव में सनसनी है। वहीं कोतवाली पुलिस ने पीड़िता को चिकित्सकीय उपचार के लिए सीएचसी भी भेजा है। बताया कि मामले की जांचकर रिपोर्ट दर्ज करने की प्रक्रिया आरंभ की गई है।

फिलहाल आरोपी युवक घर से लापता हैं और पुलिस उनकी तलाश का कर रही है। उनकी तलाश के लिए दो टीमें भी लगाई गई हैं। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत' भारतेंदु हरिश्चंद्र अंतरराष्ट्रीय गौरव सम्मान से सम्मानित

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली। हिंदी साहित्य,लेखन और समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सुप्रसिद्ध लेखिका, साहित्यकार, समाजसेविका, मोटिवेशनल काउंसलर एवं गीतांजलि काव्य प्रसार मंच की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा **'गीत'** को "भारतेंदु हरिश्चंद्र अंतरराष्ट्रीय गौरव सम्मान–2026" से अलंकृत किया गया।

यह प्रतिष्ठित सम्मान राजधानी के राजेंद्र भवन ऑडिटोरियम में आयोजित "हिंदी चेतना शिखर–2026 अंतरराष्ट्रीय सम्मान समारोह" के दौरान प्रदान किया गया। समारोह का आयोजन देवनागरी उत्थान फाउंडेशन, धरा धाम इंटरनेशनल,पं. तिलक

राज शर्मा स्मृति ट्रस्ट (अमेरिका) तथा एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड (श्रीलंका) के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। सम्मान प्रदान करने वालों में अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक दूत रसायनाचार्य डॉ. आई. मेड धर्मायसा, संयुक्त राष्ट्र से संबद्ध आधिकारिक प्रतिनिधि जनरल प्रो. जसवीर सिंह (UNGO/IPF–IGO, USA), अंतरराष्ट्रीय हिंदी–देवनागरी प्रवर्तक डॉ. इंदरजीत शर्मा, माल्टा से पधारे अंतरराष्ट्रीय साहित्यकार एवं योग–ध्यान प्रशिक्षक डॉ. योगशुआ नोगा झांग, संस्कृत साहित्य विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. (डॉ.) देवेश कुमार मिश्र, धरा धाम इंटरनेशनल के मानद कुलपति जगत धर्म चक्रवर्ती, सौहार्द शिरोमणि संत डॉ. सौरभ पाण्डेय तथा अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार एवं विचारक डॉ. शंभु पंवार शामिल रहे।

उल्लेखनीय है कि डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा **'गीत'** की लेखनी को सृजनशीलता, मानवीय संवेदना और समाजोपयोगी दृष्टि का सशक्त प्रतीक माना जाता है। उनके रचनात्मक कार्यों ने न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि समाज में चेतना, संवेदनशीलता और सकारात्मक परिवर्तन की प्रेरणा भी दी है। इसी विशिष्ट योगदान को सम्मानित करते हुए उन्हें अंतरराष्ट्रीय सम्मान पत्र प्रदान किया गया। यह सम्मान हिंदी साहित्य जगत के लिए गौरव का विषय होने के साथ-साथ देश की समृद्ध साहित्यिक परंपरा के उज्ज्वल भविष्य का भी संकेतक है।कार्यक्रम का कुशल, ओजस्वी और प्रभावशाली संचालन शिक्षाविद् डॉ. निशा अग्रवाल ने किया।

शिक्षाविद् डॉ. निशा अग्रवाल एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड से सम्मानित

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली। आईटीओ स्थित राजेंद्र भवन ऑडिटोरियम में आयोजित "हिंदी चेतना शिखर–2026" अंतरराष्ट्रीय सम्मान समारोह में जयपुर की प्रतिष्ठित शिक्षाविद, शोधकर्ता एवं पाठ्यपुस्तक लेखिका डॉ. निशा अग्रवाल को एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर के रूप में सम्मानित किया गया। डॉ. निशा अग्रवाल को यह प्रतिष्ठित सम्मान जगत धर्म चक्रवर्ती, सौहार्द शिरोमणि संत डॉ. सौरभ पांडे जी के जीवन, दर्शन, विचारधारा एवं समकालीन प्रासंगिकता पर आधारित उनके विस्तृत और मौलिक शोधग्रंथ के लिए प्रदान किया गया। यह शोधकार्य प्रो. जनक प्रसाद के अकादमिक मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। एशिया बुक

ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने इस शोध को आध्यात्मिक अनुसंधान, मानवीय मूल्यों, अंतरधार्मिक सौहार्द एवं समकालीन विचार-नेतृत्व के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानते हुए अपने अभिलेखों में दर्ज किया। समारोह में देश–विदेश के प्रमुख अतिथियों रसायनाचार्य डॉ. ई. माड़े धर्मायस (इंडोनेशिया), जनरल प्रो. जसवीर सिंह (आधिकारिक प्रतिनिधि—संयुक्त राष्ट्र | अमेरिका), डॉ. इंद्रजीत शर्मा (देवनागरी प्रवर्तक, अमेरिका), डॉ. बी. एल. गौड़ (ख्यातिलब्ध साहित्यकार एवं उद्योगपति), डॉ. विंगशुआं **'जोया'** झांग, प्रो. (डॉ.) देवेश कुमार मिश्र (संस्कृत विभाग, इग्नू, नई दिल्ली), जगत धर्म चक्रवर्ती सौहार्द शिरोमणि डॉ. सौरभ पांडे जी (प्रमुख—धराधाम, गोरखपुर) तथा डॉ. नारायण यादव (एन.डी., एबीडब्ल्यूआर), अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार-विचारक एवं वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर डॉ. शंभु पंवार मंचासिन रहे।उल्लेखनीय है कि डॉ. निशा अग्रवाल अब तक 30 से अधिक पुस्तकों की रचना कर चुकी हैं। उनकी रचनाएँ कॉलेज शिक्षा के साथ-साथ उत्तर प्रदेश बोर्ड एवं सीबीएसई बोर्ड के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित हैं। हिंदी भाषा, शिक्षा, भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों को समर्पित उनका लेखन उन्हें शिक्षा जगत में विशिष्ट पहचान दिलाता है।

अहंकार आपका शत्रु है, मित्र नहीं

विद्या भूषण भरद्वाज

अहंकार आपका शत्रु है, मित्र नहीं
अहंकार शोर है, आत्मा मौन।
वह आपको ऊँचा नहीं उठाता,
बस दूसरों से अलग कर देता है।
अहंकार ही
क्रोध की ज्वाला बनता है,
ईर्ष्या का विष घोलता है,
तुलना की आग में
जीवन की सहजता जला देता है।
जहाँ "मैं" भारी हो जाता है,
वहाँ आनंद हल्का होकर उड़ जाता है।
गीता स्मरण कराती है–

"अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते"
अहंकार में डूबा मन
स्वयं को ही कर्ता मान बैठता है।
उपनिषद फुसफुसाते हैं–

"नेति नेति"
यह मैं नहीं, वह मैं नहीं
जब सब "मैं" छूट जाता है,
तभी आत्मा शेष रहती है।
ध्यान रहे–
अहंकार में जीवन संघर्ष है,
और अहंकार के अभाव में
आनंद बिना कारण बरसता है।
जहाँ "मैं" मिटता है,
वहीं से प्रेम, करुणा
और ईश्वर का पथ प्रारंभ होता है।
अहंकार से मुक्त होना ही
सच्ची साधना और आत्म-स्वराज्य है।
— **ओशो अहोभाव**

विश्व पुस्तक मेले के लाभ

विजय गर्ग

विश्व पुस्तक मेला साक्षरता दर में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्कूल, शिक्षक और छात्र अक्सर मेले में आते हैं, तथा इसे कक्षा में सीखने के अलावा एक अनूठे शैक्षिक अवसर के रूप में उपयोग करते हैं। कई मेलों में पुस्तक वाचन, कहानी कहने के सत्र और शैक्षिक कार्यशालाएं जैसे विशेष कार्यक्रम होते हैं जो छात्रों को अधिक पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं तथा उनके समग्र शैक्षणिक विकास का समर्थन करते हैं।

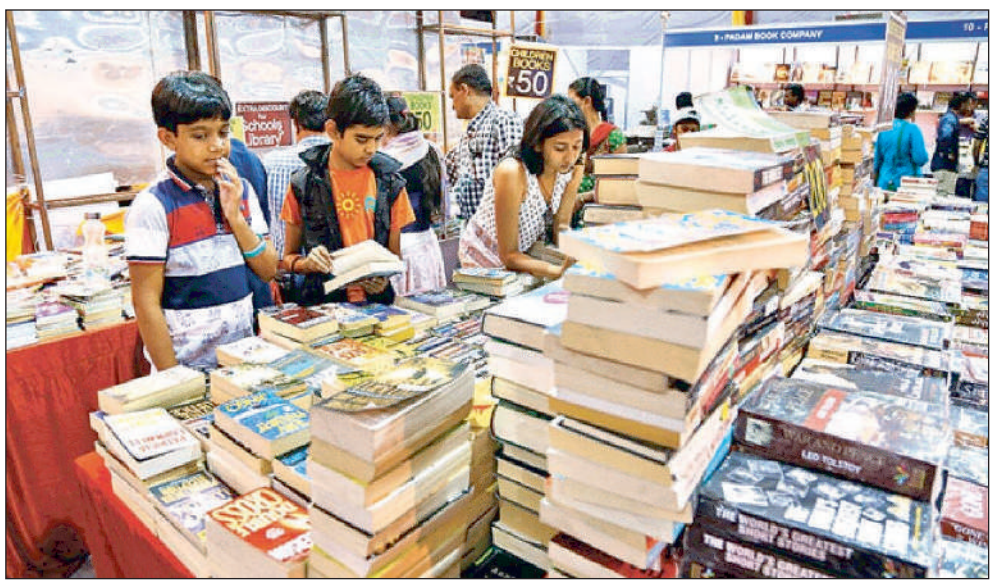

विश्व पुस्तक मेलों में अक्सर कार्यशालाएं, कविता प्रतियोगिताएं, रचनात्मक लेखन प्रतियोगिताएं और रचनात्मकता को प्रेरित करने वाले सेमिनार शामिल होते हैं। ये गतिविधियाँ युवा मन को कल्पनाशील ढंग से सोचने और लेखन, कला और कहानी कहने के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करती हैं। इंटरैक्टिव सत्रों में शामिल होकर, आगंतुक नए कौशल सीख सकते हैं और अपनी रचनात्मक क्षमता का पता लगा सकते हैं।

विश्व पुस्तक मेला पुस्तकों, पठन और विचारों का वार्षिक उत्सव है जो दुनिया भर के प्रकाशकों, लेखकों, शिक्षकों, छात्रों और पुस्तक प्रेमियों को एक साथ लाता है। यह सिर्फ पुस्तकों की प्रदर्शनी से कहीं अधिक है; यह एक जीवंत सांस्कृतिक आयोजन है जो साक्षरता, ज्ञान साझा करने और वैश्विक समझ को बढ़ावा देता है। यह मेला व्यक्तियों, समुदायों और समग्र समाज को अनेक लाभ प्रदान करता है।

पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देता है

विश्व पुस्तक मेले का एक मुख्य लाभ यह है कि यह सभी आयु वर्ग के लोगों को पढ़ने के प्रति प्रेम विकसित करने और उसे बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करता है। प्रदर्शनी में पुस्तकों की विशाल विविधता के साथ - कथा साहित्य से लेकर अकादमिक ग्रंथों तक - आगंतुकों को विविध शैलियों और विषयों का अनुभव होता है। इससे पढ़ने में रुचि पैदा करने में मदद मिलती है, विशेष रूप से बच्चों और युवा वयस्कों के बीच, जो आजीवन सीखने और बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक है।

साक्षरता और शिक्षा को प्रोत्साहित करता है

विश्व पुस्तक मेला साक्षरता दर में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्कूल, शिक्षक और छात्र अक्सर मेले में आते हैं, तथा इसे कक्षा में सीखने के अलावा एक अनूठे शैक्षिक अवसर के रूप में उपयोग करते हैं। कई मेलों में पुस्तक वाचन, कहानी कहने के सत्र और शैक्षिक कार्यशालाएं जैसे विशेष कार्यक्रम होते हैं जो छात्रों को अधिक पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं तथा उनके समग्र शैक्षणिक विकास का समर्थन करते हैं।

3 । लेखकों और पाठकों को जोड़ता है

लेखकों के लिए, विश्व पुस्तक मेला उनके काम को प्रदर्शित करने और पाठकों से सीधे जुड़ने का एक मूल्यवान मंच प्रदान करता है। लेखक पुस्तक हस्ताक्षर, पैनल चर्चा और इंटरैक्टिव सत्रों में भाग ले सकते हैं, जिससे उन्हें अपने दर्शकों के साथ संबंध बनाने का अवसर मिलेगा। दूसरी ओर, पाठकों को अपने पसंदीदा लेखकों से मिलने, नए लेखकों की खोज करने और साहित्य के बारे में सार्थक बातचीत में भाग लेने का अवसर मिलता है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करता है

विश्व पुस्तक मेला विभिन्न देशों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के प्रतिभागियों को आकर्षित करता है। विचारों का यह आदान-प्रदान वैश्विक संस्कृतियों की आपसी समझ और सराहना को बढ़ावा देता है। आगंतुक विभिन्न भाषाओं की पुस्तकों का अन्वेषण कर सकते हैं तथा विभिन्न परंपराओं, इतिहासों और दृष्टिकोणों के बारे में जान सकते हैं, जिससे यह मेला वास्तव में समृद्ध सांस्कृतिक अनुभव बन जाता है।

प्रकाशन उद्योग का समर्थन करता है

यह मेला बड़े और छोटे दोनों प्रकार के प्रकाशकों को अपने नवीनतम शीर्षक प्रदर्शित करने तथा व्यापक दर्शकों तक पहुंचने का मंच प्रदान करता है। नए और उभरते लेखकों को प्रकाशक या साहित्यिक एजेंट खोजने का अवसर मिलता है। इसके अतिरिक्त, उद्योग के पेशेवर इस मेले का उपयोग नेटवर्क बनाने, रुझानों पर चर्चा करने और सहयोग की खोज करने के लिए करते हैं, जिससे प्रकाशन जगत को विकास और नवाचार में मदद मिलती है।

रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करता है

विश्व पुस्तक मेलों में अक्सर कार्यशालाएं, कविता प्रतियोगिताएं, रचनात्मक लेखन प्रतियोगिताएं और रचनात्मकता को प्रेरित करने वाले सेमिनार शामिल होते हैं। ये गतिविधियाँ युवा मन को कल्पनाशील ढंग से सोचने और लेखन, कला और कहानी कहने के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करती हैं। इंटरैक्टिव सत्रों में शामिल होकर, आगंतुक नए कौशल सीख सकते हैं और अपनी रचनात्मक क्षमता का पता लगा सकते हैं।

पुस्तकों तक किफायती पहुंच प्रदान करता है

मेले के दौरान, कई प्रकाशक रियायती कीमतों पर पुस्तकें उपलब्ध कराते हैं। इससे पढ़ने की सामग्री छात्रों, शिक्षकों और पाठकों के लिए अधिक सुलभ हो जाती है, जिन्हें अन्यथा किताबें महंगी लग सकती हैं। किफायती मूल्य निर्धारण से अधिक लोग पुस्तकें खरीदने और व्यक्तिगत पुस्तकालय बनाने के लिए प्रोत्साहित होते हैं, जिससे पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष

डिजिटल मनोरंजन द्वारा तेजी से प्रभावित दुनिया में, विश्व पुस्तक मेला पुस्तकों और पढ़ने के महत्व की एक शक्तिशाली याद दिलाता है। यह शैक्षिक लाभ प्रदान करता है, सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देता है, रचनात्मकता का पोषण करता है, तथा साहित्यिक और प्रकाशन समुदाय का समर्थन करता है। चाहे आप छात्र हों, शिक्षक हों, लेखक हों या फिर पुस्तक प्रेमी हों, विश्व पुस्तक मेले में सभी को कुछ न कुछ मूल्यवान उपलब्ध है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट

संपादकीय

चिंतन-मनन

भारत में युवा कॉर्पोरेट पेशेवरों में बढ़ती किडनी स्वास्थ्य चिंताएँ

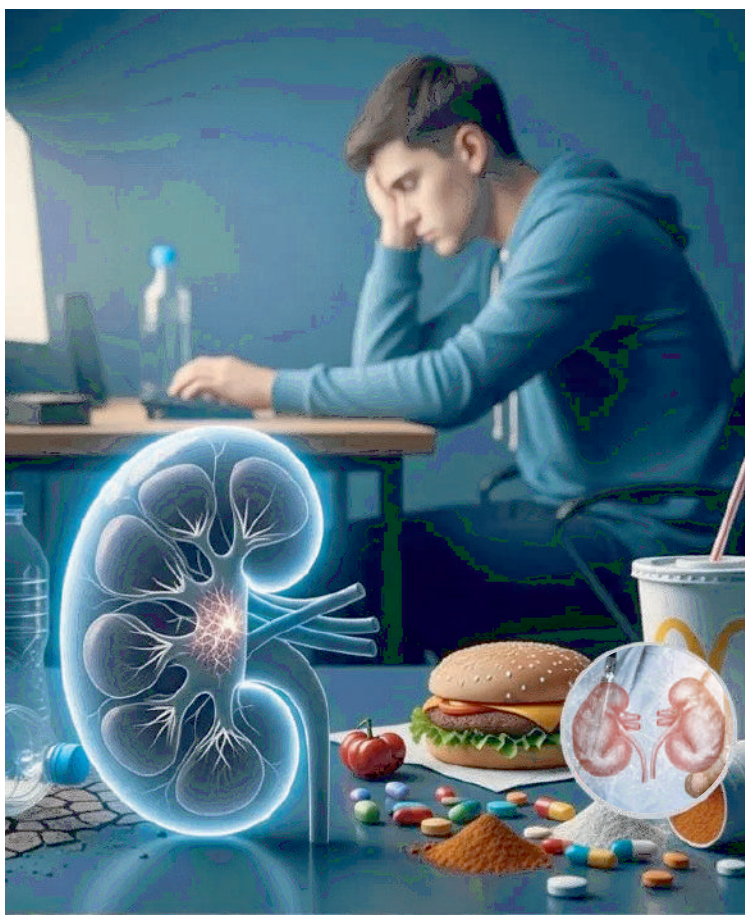

भारत की कई बड़ी कॉर्पोरेट कंपनियों द्वारा कराए गए हालिया वार्षिक स्वास्थ्य परीक्षणों में एक चौंकाने वाला तथ्य सामने आया है — 40 वर्ष से कम आयु के 40% से अधिक युवा एग्ज़ीक्यूटिव्स में किडनी से संबंधित शुरुआती असामान्यताएँ पाई गई हैं। यह आँकड़ा केवल चिकित्सा दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और जीवनशैली के स्तर पर भी गहरी चेतावनी देता है।

इन आँकड़ों का वास्तविक अर्थ क्या है?

यह समझना बहुत आवश्यक है कि **40% का अर्थ यह नहीं है कि 40% युवाओं को गंभीर किडनी रोग (CKD) हो चुका है।** बल्कि यह दर्शाता है कि: किडनी पर प्रारंभिक दबाव (early kidney stress) बढ़ रहा है। ऐसे संकेत मिल रहे हैं जो आगे चलकर गंभीर बीमारी का कारण बन सकते हैं।

पाई गई प्रमुख असामान्यताएँ इनमें सामान्यतः निम्न शामिल हैं:

UACR (Urine Albumin-to-Creatinine Ratio) का बढ़ना – यह किडनी की शुरुआती क्षति का सबसे संवेदनशील संकेत है

* सीरम क्रिएटिनिन का हल्का बढ़ाव

eGFR में मामूली गिरावट – जो किडनी की कार्यक्षमता दर्शाता है

इलेक्ट्रोलाइट असंतुलन याr अल्ट्रासाउंड में संरचनात्मक बदलाव सबसे खतरनाक पहलू यह है कि ये सभी परिवर्तन अक्सर बिना किसी लक्षण के होते हैं।

यह प्रवृत्ति क्यों चिंताजनक है? पारंपरिक रूप से किडनी रोग को:

* वृद्धावस्था
* लंबे समय से चली आ रही मधुमेह या उच्च रक्तचाप से जोड़ा जाता रहा है।

लेकिन आज: युवा, पढ़े-लिखे, कामकाजी और शहरी आबादी में इसका उभरना एक नई स्वास्थ्य महामारी का संकेत देता है।

मुख्य कारण (Key Contributing Factors)

1. अत्यधिक बैठने वाला जीवन (Sedentary Lifestyle)

*** कॉर्पोरेट कार्यशैली में:**

* लंबे समय तक कुर्सी पर बैठना
* शारीरिक गतिविधि की कमी

*** इसके परिणाम:**

* मोटापा
* इंसुलिन रेज़िस्टेंस
* उच्च रक्तचाप

ये सभी किडनी पर निरंतर दबाव डालते हैं।

2. मानसिक तनाव और नींद की कमी

लगातार डेडलाइन, टारगेट और स्क्रीन टाइम

* हार्मोनल असंतुलन
* सूजन (Inflammation)
* ब्लड प्रेशर में उतार-चढ़ाव

को जन्म देते हैं — जो किडनी के लिए धीमा ज़हर साबित होते हैं।

3. बिना पहचानी गई डायबिटीज़ और हाइपरटेंशन

* भारत में:
* युवा-उम्र में डायबिटीज़
* "साइलेंट" हाई ब्लड प्रेशर

बहुत आम हो चुके हैं। व्यक्ति खुद को स्वस्थ मानता है, लेकिन किडनी भीतर-ही-भीतर क्षतिग्रस्त होती रहती है।

4. आधुनिक आहार और गलत खान-पान

* कॉर्पोरेट कल्चर में आम है:
* प्रोसेस्ड और जंक फूड
* अधिक नमक और शक्कर
* बाहर का खाना
* फल-सब्ज़ियों की कमी

ये सभी मेटाबॉलिक गड़बड़ी और किडनी पर बोझ बढ़ाते हैं।

5. दवाओं और सप्लीमेंट्स का अनियंत्रित उपयोग बार-बार:

* दर्द निवारक दवाएँ (NSAIDs)
* एनर्जी ड्रिंक्स
* बिना डॉक्टर सलाह के सप्लीमेंट्स

लंबे समय में किडनी को गंभीर नुकसान पहुँचा सकते हैं।

जल्दी पहचान (Early Detection) क्यों ज़रूरी है?

किडनी रोग:

* शुरुआती वर्षों में बिल्कुल शांत रहता है
* सामान्य क्रिएटिनिन रिपोर्ट देर से बिगड़ती है
* **यहीं UACR की भूमिका निर्णायक हो जाती है
* मूत्र में सूक्ष्म मात्रा में एल्ब्यूमिन की पहचान
* गंभीर क्षति से कई वर्ष पहले चेतावनी
* समय रहते रोकथाम का अवसर

किडनी जोखिम मूल्यांकन में नवीनतम प्रगति (Latest Developments)

1. UACR को नियमित स्क्रीनिंग में शामिल करना आधुनिक शोध बताते हैं: हल्का-सा बढ़ा हुआ UACR भी

* हृदय रोग
* भविष्य में CKD

का संकेत हो सकता है। अब इसे केवल डायबिटीज़ तक सीमित नहीं रखा जा रहा, बल्कि युवा, निष्क्रिय जीवनशैली वालों में भी सुझाया जा रहा है।

2. डिजिटल हेल्थ और टेक्नोलॉजी का उपयोग अब संभव है:

* मोबाइल-आधारित UACR टेस्ट
* घर से सैंपल कलेक्शन
* AI-आधारित जोखिम विश्लेषण

जो जीवनशैली, जीन और बायोमार्कर को जोड़कर व्यक्तिगत जोखिम प्रोफाइल बनाते हैं।

3. पर्सनलाइज़्ड प्रेडिक्शन मॉडल अब किडनी जोखिम को आँका जाता है

* ब्लड प्रेशर पैटर्न
* शुगर नियंत्रण
* जेनेटिक रिस्क
* इमेजिंग मार्कर

जिससे व्यक्ति-विशेष के अनुसार रोकथाम रणनीति बनती है।

युवा पेशेवरों के लिए संदेश

* किडनी स्वास्थ्य उम्र नहीं, जीवनशैली से जुड़ा विषय है
* शुरुआती चेतावनी को नज़रअंदाज़ करना भविष्य को खतरे में डाल सकता है
* समय रहते सुधार से बीमारी को रोका जा सकता है

अनुशंसित व्यावहारिक उपाय

* नियमित स्वास्थ्य जाँच (UACR, BP, शुगर)
* संतुलित आहार और नियमित व्यायाम
* पर्याप्त पानी और नींद
* तनाव प्रबंधन
* बिना सलाह दवाओं से परहेज़
* असामान्य रिपोर्ट पर तुरंत चिकित्सकीय परामर्श

निष्कर्ष (In Summary) 40% से अधिक युवाओं में किडनी संकेत मिलना अलार्म है, निर्णय नहीं

* यह जीवनशैली और मेटाबॉलिक जोखिम का परिणाम है
* UACR जैसे आधुनिक परीक्षण समय रहते बचाव का अवसर देते हैं
* कॉर्पोरेट हेल्थ डेटा भारत में प्रिवेंटिव हेल्थकेयर की नई दिशा दिखा रहा है।

UACR टेस्ट क्या है? (Urine Albumin-to-Creatinine Ratio)

UACR टेस्ट एक अत्यंत संवेदनशील और शक्तिशाली जांच है, जिसका उपयोग मूत्र (पेशाब) में एल्ब्यूमिन नामक प्रोटीन की बहुत ही सूक्ष्म मात्रा को पहचानने के लिए किया जाता है।

एल्ब्यूमिन सामान्यतः रक्त में पाया जाता है — मूत्र में नहीं। यह टेस्ट मूत्र में एल्ब्यूमिन की मात्रा को क्रिएटिनिन (मांसपेशियों से बनने वाला अपशिष्ट पदार्थ) के अनुपात में मापता है, जिससे मूत्र के पतले या गाढ़े होने से होने वाली त्रुटि दूर हो जाती है।

इसी कारण UACR, केवल एल्ब्यूमिन जांच से कहीं अधिक सटीक माना जाता है। शारीरिक (Physiological) आधार एल्ब्यूमिन शरीर में:

* रक्त में तरल संतुलन बनाए रखता है
* पोषक तत्वों और हार्मोन के परिवहन में मदद करता है

*** स्वस्थ किडनी:** एल्ब्यूमिन को रक्त में रोककर रखती है केवल अपशिष्ट पदार्थों को मूत्र में निकालती है

*** जब किडनी का फिल्टर (Glomerulus) क्षतिग्रस्त होता है:** एल्ब्यूमिन मूत्र में रिसने लगता है यह नुकसान लक्षणों के दिखने से बहुत पहले शुरू हो सकता है

यही कारण है कि UACR टेस्ट "साइलेंट किडनी डैमेज" पकड़ने में बेहद उपयोगी है

UACR इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

1. किडनी रोग की शुरुआती पहचान UACR किडनी की बीमारी को उस अवस्था में पकड़ सकता है, जबः मरीज को कोई लक्षण नहीं होते ब्लड टेस्ट (क्रिएटिनिन, eGFR) अभी सामान्य दिखते हैं

इस चरण में इलाज शुरू करने से बीमारी को रोकना या धीमा करना संभव होता है।

2. हृदय (Heart) रोग और मृत्यु जोखिम का संकेतक नवीन शोधों से यह स्पष्ट हुआ है किः UACR का हल्का सा बढ़ना भी

* हार्ट अटैक हार्ट फेल्योर स्ट्रोक और
* समय से पहले मृत्यु के खतरे से जुड़ा हो सकता है

यह जोखिम तब भी मौजूद रहता है, जब UACR "नॉर्मल रेंज" में ही क्यों न हो।

3. डायबिटीज और हाई BP में अत्यंत उपयोगी UACR विशेष रूप से जरूरी है:

* मधुमेह (Diabetes)
* उच्च रक्तचाप (Hypertension)
* हृदय रोग
* किडनी रोग का पारिवारिक इतिहास

इन स्थितियों में UACR:

* बीमारी की गंभीरता बताता है
* इलाज की प्रभावशीलता पर नजर रखने में मदद करता है

UACR टेस्ट कैसे किया जाता है? आमतौर पर एक बार का मूत्र नमूना (Spot Urine Sample) लिया जाता है

लैब में मापा जाता है:

* एल्ब्यूमिन (mg)
* क्रिएटिनिन (g)

परिणाम दिया जाता है: mg एल्ब्यूमिन / g क्रिएटिनिन (mg/g)

सटीकता बढ़ाने के लिए:

* टेस्ट से पहले भारी व्यायाम न करें
* मूत्र संक्रमण या बुखार की स्थिति में टेस्ट टालें
* "Clean-catch" विधि अपनाएं - UACR परिणामों की व्याख्या
* UACR स्तर (mg/g)
* अर्थ
* < 30 mg/g सामान्य – किडनी जोखिम कम
* 30–300 mg/g मध्यम वृद्धि – प्रारंभिक किडनी क्षति संभव
* 300 mg/g गंभीर – स्पष्ट किडनी क्षति की संभावना

महत्वपूर्ण तथ्य: आज के शोध बताते हैं कि 30 mg/g से कम होने पर भी, यदि मान ऊपरी सीमा के पास है, तो हृदय और मृत्यु का जोखिम बढ़ सकता है।

नवीनतम शोध और क्लिनिकल महत्व

1. UACR और हार्ट फेल्योर टाइप-2 डायबिटीज रोगियों पर किए गए हालिया अध्ययनों में पाया गया:

* बढ़ा हुआ UACR - हार्ट फेल्योर के खतरे का स्वतंत्र संकेतक है भले ही eGFR सामान्य हो

2. मृत्यु जोखिम की भविष्यवाणी लंबे समय तक चले बड़े जनसंख्या अध्ययनों में:

* UACR और हृदय मृत्यु
* कुल मृत्यु के बीच सीधा संबंध पाया गया
* यह संबंधः
* उम्र
* लिंग
* जातीय समूह से स्वतंत्र देखा गया

3. केवल किडनी नहीं – पूरे शरीर का संकेत UACR अब माना जाता है:

* रक्त नलिकाओं (Vascular Health) का दर्पण
* कोरोनरी आर्टरी डिजीज की गंभीरता से जुड़ा "Systemic Damage Marker"

4. टेस्ट में उतार-चढ़ाव (Variability)

* विशेषकर डायबिटीज में: UACR दिन-प्रतिदिन बदल सकता है इसलिए डॉक्टर अक्सर 2–3 बार टेस्ट करवाने की सलाह देते हैं।

तकनीकी और डायग्नोस्टिक प्रगति

1. स्मार्टफोन और पोर्टेबल UACR टेस्ट अब ऐसे आधुनिक उपकरण विकसित हो रहे हैं:

* स्मार्टफोन से जुड़ने वाले UACR किट
* बहुत कम समय में परिणाम
* ग्रामीण और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में उपयोगी

2. उन्नत जोखिम मॉडल * आज UACR को:

* eGFR ब्लड प्रेशर HbA1c जैसे अन्य मार्कर्स के साथ जोड़कर व्यक्तिगत जोखिम अनुमान (Personalized Risk Prediction) किया जा रहा है।

मुख्य संदेश (Key Takeaways)

* UACR केवल किडनी टेस्ट नहीं — यह पूरे शरीर की रक्त नलिकाओं और अंगों की सेहत का संकेतक है।
* थोड़ी सी बढ़ोतरी भी भविष्य की गंभीर बीमारियों का संकेत हो सकती है।
* आधुनिक शोध और तकनीक UACR को रोकथाम आधारित चिकित्सा का एक मजबूत स्तंभ बना रहे हैं।

भारत की सड़कें, प्रशासनिक लापरवाही और जवाबदेही का संकट:- विकसित भारत 2047 के सामने खड़ी एक गंभीर चुनौती?

भारत में सड़कों पर गड्ढों, खुले मैनहोल, निर्माण सामग्री के बेतरतीब ढेर, अधूरे अंडर-कंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट्स और प्रशासनिक उदासीनता के कारण हर वर्ष हजारों लोग जान गंवा रहे हैं या स्थायी रूप से अपंग हो रहे हैं। क्या अधिकारियों और ठेकेदारों की लापरवाही की सज़ा केवल जांच और मुआवजे तक सीमित रहेगी? -आंखों पर परसेंट का कवर कब उतरेगा?-आम जनता अब समझते जा रही है -एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत आज स्वयं को 21वीं सदी की उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में प्रस्तुत कर रहा है।विकसित भारत 2047 का लक्ष्य केवल एक राजनीतिक नारा नहीं, बल्कि बुनियादी ढांचे, शासन क्षमता, नागरिक सुरक्षा और जीवन गुणवत्ता में आमूलचूल परिवर्तन का वादा है।लेकिन इसी भारत में सड़कों पर गड्ढों, खुले मैनहोल, निर्माण सामग्री के बेतरतीब ढेर, अधूरे अंडर- कंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट्स और प्रशासनिक उदासीनता के कारण हर वर्ष हजारों लोग जान गंवा रहे हैं या स्थायी रूप से अपंग हो रहे हैं।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र मानता हूं क्रि यिह विडंबना नहीं, बल्कि एक संरचनात्मक विफ़लता है, इसमें माननीय नेताओं की समय समय पर विपक्ष पर की जा रही टांटिंग बाज़ी 10 से 50 प्रतिशत वाला मामला अधिकारियों कर्मचारियों संबंधित लाइसेंसिंग अथारिटी द्वारा आंख मूंद कर बैठना आंखों पर परसेंट का कवर चढ़ा देना अब आम जनता आप समझते जा रही है जो, भारत की विकास यात्रा पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगाती है।नोएडा में 27 वर्षीय इंजीनियर युवराज मेहता की गड्ढे में गाड़ी फंसने से हुई दर्दनाक मौत ने पूरे देश को झकझोर दिया।सोशल मीडिया पर यह मामला ट्रेंड कर रहा है, क्योंकि यह किसी प्राकृतिक आपदा का नहीं, बल्कि मानवीय लापरवाही का परिणाम था। इस घटना के बाद सोशल मीडिया पर नागरिकों का गुस्सा फूट पड़ा। लोगों ने सवाल उठाया कि क्या टैक्स देने वाले नागरिकों की जान की कोई कीमत नहीं है?क्या अधिकारियों और ठेकेदारों की लापरवाही की सज़ा केवल जांच और मुआवजे तक सीमित रहेगी?यह घटना केवल एक व्यक्ति की मृत्यु नहीं, बल्कि पूरे प्रशासनिक तंत्र की विफलता का प्रतीक बन गई।अभी दो दिवस पूर्व हमारे

गोंदिया राइस सिटी में भी रोड़ों पर हुए गड्ढों से परेशान लोगों ने भीख मांगो एक रैली निकाली जिसमें आम जनता से पैसे लेकर नगर परिषद को देने की बात कही गई ताकि वह गड्ढों को बुझा सके छत्तीसगढ़ की भाटापारासिटी में भी हमारे रिश्तेदार रोड पर पड़े गड्ढे के कारण एक्टिवा से गिर पड़े और करीब एक माह तक अस्पताल में भर्ती रहे बड़ी मुश्किल से बहुत महंगा ट्रीटमेंट करने के बाद उनकी जान बची।

साथियों बात अगर हम भारत में सड़कों की खराब स्थिति एक संरचनात्मक संकट इसको समझने की करें तो भारत का सड़क नेटवर्क विश्व में दूसरा सबसे बड़ा है, जिसकी लंबाई 63 लाख किलोमीटर से अधिक है। इसके बावजूद सड़क सुरक्षा, गुणवत्ता और रखरखाव के मामले में भारत वैश्विक सूचकांकों में बेहद नीचे है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों के मामले में भारत लगातार विश्व में शीर्ष पर बना हुआ है।इनमें एक बड़ा कारण सड़कों की जर्जर स्थिति, गड्ढे, असमान सतह जलभराव और अवैज्ञानिक डिजाइन है।ग्रामीण भारत में स्थिति और भी भयावह है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के बावजूद बड़ी संख्या में ग्रामीण सड़कें या तो जर्जर हैं या समय पर मरम्मत के अभाव में जानलेवा बन चुकी हैं। बरसात के मौसम में गड्ढे दिखाई नहीं देते, जिससे दुर्घटनाओं की आशंका कई गुना बढ़ जाती है। पुरानी शहरी सड़कों पर नई पाइपलाइन, केबल और सीवेज के लिए की गई खुदाई महीनों तक खुली रहती है, और मरम्मत केवल कागज़ों में सटीक रूप से पूरी होती है।

साथियों बात अगर हम निर्माण मलबा और अंडर- कंस्ट्रक्शन अव्यवस्था कुछ समझने की करें तो, भारत के शहरों में अंडर- कंस्ट्रक्शन मकानों और इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं का मलबा सड़कों पर पड़ा रहना आम बात हो गई है। नियमों के अनुसार निर्माण स्थल को सुरक्षित करना, चेतावनी संकेत लगाना और मलबा हटाना अनिवार्य है, लेकिन ज़मीनी स्तर पर इन नियमों का खुलेआम उल्लंघन होता है। स्थानीय नगर निकाय, पुलिस और विकास प्राधिकरण एक-दूसरे पर जिम्मेदारी डालकर चुप्पी साध लेते हैं।आंखें और मुंह बंद व्यवस्था सड़क दुर्घटनाओं के बाद अक्सर देखा जाता है कि प्रशासनिक मशीनरी सक्रिय होने में घंटों लगा देती है। एम्बुलेंस की देरी, ट्रैफिक पुलिस की अनुपस्थिति, और अस्पतालों में इलाज में लापरवाही कई बार मौत को निश्चित बना देती है। यह केवल व्यक्तिगत असंवेदनशीलता नहीं, बल्कि एक संस्थागत संस्कृति का परिणाम है, जहां जवाबदेही का अभाव है।निर्माण कार्यों की अनुमति देने वाले विभागों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन यही विभाग अक्सर सुरक्षा मानकों की अनदेखी करते हैं। सड़क खुदाई की अनुमति देने के बाद उसकी निगरानी नहीं होती कि गड्ढा समय पर भरा गया या नहीं, चेतावनी बोर्ड लगाए गए या नहीं। यह लापरवाही दुर्घटनाओं की श्रृंखला को जन्म देती है, जिसे लेखकीय रूप से प्रशासनिक लापरवाही का साइकिल कहा जा सकता है।

साथियों बात अगर हम विकसित भारत 2047 बनाम सड़क सुरक्षा की हकीकत इसको समझने की करें तो यह विकसित भारत 2047 की परिकल्पना में विश्वस्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर एक केंद्रीय स्तंभ है। सरकार ने भारतमाला, गतिक शक्ति, स्मार्ट सिटी मिशन और अमृत योजना जैसी कई महत्वाकांक्षी परियोजनाएं शुरू की हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या केवल नई सड़कों और एक्सप्रेसवे का निर्माण ही विकास है, या मौजूदा सड़कों की सुरक्षा और रखरखाव भी उतना ही आवश्यक है?सरकार ने हाल के वर्षों में पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ सड़क निर्माण के लिए बायो-बिटुमेन जैसी तकनीकों को बढ़ावा दिया है, जिसमें कृषि अपशिष्ट और जैविक सामग्री का उपयोग होता है। यह तकनीक सड़कों की उम्र बढ़ाने, कार्बन उत्सर्जन कम करने और लागत घटाने में सहायक मानी जा रही है। लेकिन तकनीक तभी प्रभावी होगी जब उसके साथ गुणवत्ता नियंत्रण, पारदर्शिता और जवाबदेही भी सुनिश्चित की जाए।

साथियों बात अगर हम कई मामलों में न्यायपालिकाओं की सख्त टिप्पणीयाँ विशेष रूप सेः बॉम्बे हाईकोर्ट का हस्तक्षेप रेखांकित करने वाली बात है, बॉम्बे हाईकोर्ट सहित कई न्यायालयों ने बार-बार नगर निकायों और राज्य सरकारों की लापरवाही पर नाराजगी जताई है। अदालतों का स्पष्ट मत है कि गड्ढों और खुले मैनहोल से होने वाली मौतें दुर्घटना नहीं, बल्कि मानव निर्मित आपराधिक लापरवाही हैं।अदालत ने कहा कि जब तक अधिकारियों और ठेकेदारों को व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा, तब तक स्थिति में कोई सुधार नहीं होगा। केवल मुआवजा देना पर्याप्त नहीं है;दोषियों क़े खिलाफ आपराधिक कार्रवाई आवश्यक है। पीआईएल नंबर 71/2013, एक ऐतिहासिक मामला हैं।13 अक्टूबर 2025 को बॉम्बे हाईकोर्ट की दो सदस्य बेंच न्यायमूर्ति की खंडपीठ ने पीआईएल नंबर 71/2013 पर आदेश सुनाया था। यह जनहित याचिका 2013 में तत्कालीन न्यायमूर्ति के एक पत्र के आधारपर स्वतः संज्ञान (सुओ मोटो) लेकर दर्ज की गई थी।यह मामला इस बात का उदाहरण है कि समस्या कितनी पुरानी और गंभीर है। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि वर्षों की सुनवाई और निर्देशों के बावजूद जमीनी स्तर पर कोई ठोस सुधार नहीं हुआ है, जो प्रशासन की उदासीनता क़ो स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

साथियों बात अगर हम इस भारतीय रोडो परगड्ढों की स्थिति को अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य, में भारत की तुलना और सीख क़ो समझने की करेंतो विकसित देशों में सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु दर भारत की तुलना में कहीं कम है। इसका कारण बेहतर डिजाइन, नियमित रखरखाव, सख्त जवाबदेही और त्वरित आपातकालीन सेवाएं हैं। भारत यदि वैश्विक शक्ति बनना चाहता है, तो उसे केवलआर्थिक विकास ही नहीं, बल्कि नागरिक सुरक्षा के मानकों में भी वैश्विक स्तर अपनाने होंगे।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़िजिवाबदेही क़िभारत की सड़कें केवल यातायात का माध्यम नहीं, बल्कि राज्य की शासन क्षमता और संवेदनशीलता का आईना हैं। युवराज मेहता जैसी मौतें हमें यह याद दिलाती हैं कि विकास के दावों के बीच नागरिकों की जान सबसे बड़ा सवाल है। विकसित भारत 2047 तभी संभव है, जब सड़क सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाए, प्रशासनिक लापरवाही पर कठोर कार्रवाई हो, और न्यायपालिका के निर्देशों को केवल कागज़ों में नहीं, बल्कि ज़मीनी स्तर पर लागू किया जाए। सड़क पर हर गड्ढा, हर खुला मैनहोल और हर अधूरा निर्माण कार्य एक संभावित मौत है। सवाल यह नहीं कि अगली दुर्घटना कब होगी, सवाल यह है कि क्या हम उससे पहले जागेंगे?

स्टेटस की तस्वीरें ...!

बहुत कुछ बोलती हैं स्टेटस की तस्वीरें,
नहीं है जुबान उनकी खेंच देती लकीरें।
वो अनजाने ही खूब खोल देती है पोल,
बिना आवाज के ही बजा देती है ढोल।

कौन हैं अपना और कौन हैं यहाँ पराया,
तस्वीरों में देखकर ही 'नजरों' में धराया।
आज अभी तक था 'दिल' में ही समाया,
सोचता हूँ मैंने क्यों! बेवजह प्रेम बहाया।

क्यों? ऐसे रिश्तों के लिए 'शिश' नवाया,
आखिर में अपना लहू बेगाना कहलाया।
पता नहीं कहाँ से कौन 'खंजर' ले आया,
ये प्यार का समुंदर सुखी नदी में नहाया।

संजय एम तराणेकर

जो पुण्य अर्चन कर सत्संग को अपनाते हैं जीवन को धरा पर वही चमकाते हैं - पंडित राकेश व्यास

महेश्वर मध्यप्रदेश, मां नर्मदा प्रकुट महोत्सव के अवसर पर मां रेवा आरती समिति महेश्वर द्वारा आयोजित मां नर्मदा महापुराण की कथा के चतुर्थ दिन कथावाचक पंडित राकेश व्यास जी ने कहा कि कलह कटुता के बीजारोपण से आहत होकर मां रेवा के तीर पर आकर भक्ति में लीन रहने वाले भाग्यवानों का जीवन धन्य है। जो पुण्य अर्जन कर सत्संग को अपनाते है जीवन को धरा पर वही चमकाते है। यही असली चमक है तो भक्ति का यहां दिव्य रूप भी है। इस धार्मिक कार्यक्रम में भजनों की सुरमधुर प्रस्तुत में ₹कहता रहूं सदा₹ मां नर्मदा तथा मैया के रंग में अंगना में भक्ति रस बरसे जैसी सुमधुर सरस रचनाओं में श्रद्धालु महिलाए थिरकती नजर आई। पंडित श्री राकेश व्यास ने कहा की आज समसमहिक समय पर कटाक्ष की इस महत्वकांक्षा की अंधी दौड़ ने सिर्फ स्वार्थ को बढ़ावा दिया है। नाम की भूख, प्रतिष्ठा व शोहरत ने सामानता के भाव को नष्ट कर दिया है। छोटो के प्रति स्नेह के अभाव की अनदेखी अनसुनी बातों की उपेक्षा के भाव को जन्म दिया है आज आवश्यकता है अनेकता में एकता है जन जन के मन में अनेकता में एकता का भाव के दीप जलाने की तभी मानवीयता धरा पर साकार रूप ले पाएगी। एक विनम्रता भाव से हम मां नर्मदा से प्रार्थना करे कि सर्वे भवन्तु सुखिन की मंगल कामना के साथ हम सब सदा नम्रता को जीवन में अपनाएं और रग रग में भक्ति रस बरसाए ममता का आंचल धरा पर चमकाए मां दर्श से वंचित हमे न तरसाए इन्ही पंक्तियों के साथ चौथा (चतुर्थ) दिवस की कथा का विराम दिया गया। आज मीरा जयंती पर नगर के गायक ओमप्रकाश जी ने मीरा के पद सुनाएं। उसके बाद आरती व महाप्रसादी वितरण से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यहां जानकारी पंडित प्रदीप शर्मा ने प्रेस विज्ञप्ति में दी।

रिपोर्टिंग हरिहर सिंह चौहान

यूएई राष्ट्रपति की भारत यात्रा: 2-3 घंटे में भविष्य का शिलान्यास

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

दिल्ली की सर्द सुबह 19 जनवरी 2026 को इतिहास की गर्म सांसों से भर उठी, जब पालम वायुसेना अड्डे पर संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाह्यान का विमान उतरा। यह केवल एक राजकीय आगमन नहीं था, बल्कि भरोसे, आत्मीयता और साझा भविष्य का प्रतीक क्षण था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने औपचारिकताओं की सीमाएं तोड़ते हुए स्वयं आगे बढ़कर अपने मित्र का स्वागत किया। दोनों नेताओं का आलिंगन कैमरों से कहीं आगे जाकर दिलों में उतर गया। उस क्षण ने यह स्पष्ट कर दिया कि यह यात्रा कागजी समझौतों की नहीं, बल्कि विश्वास की ठोस इमारत खड़ी करने की है, जो आने वाले समय की दिशा तय करेगी। मात्र दो से तीन घंटे की इस संक्षिप्त यात्रा ने यह सिद्ध कर दिया कि जब नेतृत्व दूरदर्शी हो, तो समय की सीमा अर्थहीन हो जाती है। वैश्विक मीडिया ने इसे मिनटों में दशकों की कूटनीति का उदाहरण बताया। यह यात्रा केवल बैठक नहीं थी, बल्कि ऊर्जा, सुरक्षा, तकनीक और समृद्धि के नए युग की आधारशिला थी। दोनों नेताओं की बातचीत में स्पष्टता, विश्वास और गति दिखाई दी। यह मुलाकात ऐसे समय में हुई जब दुनिया ऊर्जा संकट, भू-राजनीतिक तनाव और आर्थिक अनिश्चितताओं से जूझ रही है, और ऐसे में भारत-यूएई साझेदारी ने स्थिरता और समाधान का मार्ग दिखाया।

ऊर्जा क्षेत्र में हुए ऐतिहासिक समझौते इस यात्रा की रीढ़ साबित हुए। हिंदुस्तान पेट्रोलियम निगम लिमिटेड और एडीएनओसी गैस के बीच दस वर्षीय तरलीकृत प्राकृतिक गैस आपूर्ति करार ने भारत की ऊर्जा सुरक्षा को अभूतपूर्व मजबूती दी। वर्ष 2028 से प्रतिवर्ष पांच लाख मीट्रिक टन गैस की आपूर्ति सुनिश्चित होगी, जिसकी कुल कीमत लगभग तीन अरब डॉलर आंकी गई है। वैश्विक बाजारों की अस्थिरता के दौर में यह करार भारत के उद्योग, बिजली उत्पादन और घरेलू उपभोग के लिए सुरक्षा कवच बनेगा। यूएई का भारत का दूसरा सबसे बड़ा गैस आपूर्तिकर्ता बनना इस गहरी रणनीतिक साझेदारी का प्रमाण है।

परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में इस यात्रा ने भविष्य की नींव और भी मजबूत की। भारत के शांति कानून के अंतर्गत नागरिक परमाणु सहयोग को नई दिशा मिली। दोनों देशों ने बड़े परमाणु संयंत्रों के साथ-साथ छोटे मॉड्यूलर रिएक्टरों पर संयुक्त रूप से कार्य करने का निर्णय लिया। यह पहल ऊर्जा उत्पादन को सुरक्षित, सस्ता और पर्यावरण के अनुकूल बनाएगी। संयंत्र संचालन, तकनीकी रखरखाव और परमाणु सुरक्षा में गहन सहयोग तय हुआ। यह साझेदारी भारत को स्वच्छ ऊर्जा के लक्ष्य की ओर तेजी से आगे बढ़ाएगी और जलवायु परिवर्तन से लड़ने के वैश्विक प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

अंतरिक्ष क्षेत्र में हुई सहमति ने इस यात्रा को भविष्यवादी स्वरूप प्रदान किया। भारतीय अंतरिक्ष नियामक संस्था और यूएई स्पेस एजेंसी के बीच आशय पत्र पर हस्ताक्षर हुए, जिसमें अंतरिक्ष अवसंरचना, उपग्रह निर्माण, प्रक्षेपण सुविधाएं और संयुक्त मिशनों की रूपरेखा तय की गई। इसके साथ ही अंतरिक्ष स्टार्टअप्स के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, नवाचार केंद्र और व्यावसायीकरण के अवसर विकसित करने पर सहमति बनी। यह साझेदारी अंतरिक्ष को केवल वैज्ञानिक खोज तक सीमित नहीं रखेगी, बल्कि आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का नया माध्यम बनाएगी।

व्यापार और निवेश के मोर्चे पर दोनों नेताओं ने अत्यंत महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए। दोनों नेताओं ने 2032 तक द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना कर 200 अरब डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया। व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते के बाद व्यापार पहले ही ऐतिहासिक स्तर पर पहुंच चुका है। गुजरात के धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र में यूएई कंपनियों द्वारा हवाई अड्डे, बंदरगाह, रेलवे कनेक्टिविटी, स्मार्ट शहरी टाउनशिप और ऊर्जा अवसंरचना में बड़े निवेश की घोषणा हुई। यह निवेश भारत के बुनियादी ढांचे, औद्योगिक विकास और रोजगार सृजन को नई गति देगा।

रणनीतिक और रक्षा सहयोग में भी इस यात्रा ने नया अध्याय जोड़ा। दोनों देशों ने रणनीतिक रक्षा साझेदारी के लिए आशय पत्र पर हस्ताक्षर किए, जिसमें रक्षा उद्योग, उन्नत तकनीक, संयुक्त प्रशिक्षण और नवाचार को प्राथमिकता दी गई। साइबर सुरक्षा, आतंकवाद विरोधी प्रयासों और विशेष अभियानों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति बनी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उच्च क्षमता संगणना, डिजिटल संरचनाएं और खाद्य सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में भी संयुक्त पहल की योजना बनी। यह सहयोग केवल द्विपक्षीय नहीं, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा संतुलन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सहेजना ज़रूरी है, पर कितना? संचय प्रवृत्ति का द्वंद्व

-सुनील कुमार महला

मनुष्य की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि वह इस जीवन को स्थायी मानकर चलने लगता है। वह सोचता है कि जितना अधिक वह संचय कर लेगा-धन, संपत्ति, पद, प्रतिष्ठा या संबंध-उतना ही उसका भविष्य सुरक्षित हो जाएगा। वास्तव में, इसी सोच के कारण वह निरंतर संग्रह में लगा रहता है। परंतु संचय की यह प्रवृत्ति, जब आवश्यकता से अधिक(बहुत अधिक संचय की भावना)हो जाती है, तब वह जीवन को सरल नहीं बल्कि बोझिल बना देती है। मनुष्य का मन धीरे-धीरे इच्छाओं, भय और असंतोष से भरने लगता है। वह आज में जीना भूलकर कल की चिंता में अपना वर्तमान खो देता है। हालांकि, कुछ हद तक व्यक्ति को संचय करना ठीक है, जैसा कि भविष्य की आवश्यकता हेतु संचय, विपत्ति हेतु संचय, आने वाले कल हेतु संचय आदि। संस्कृत में एक श्लोक में कहा गया है कि-'अद्य कृत्वा न कर्तव्यं कर्तव्यमद्य एव तत। भविष्ये निश्चयं कृत्वा संचयं कुरु बुद्धिमान॥' अर्थात इसका मतलब यह है कि आज जो करना आवश्यक है, उसे आज ही करो। भविष्य को ध्यान में रखकर बुद्धिमान व्यक्ति संचय करता है।विपत्ति में भी संचय का महत्व है, क्यों कि संचित धन विपत्ति में मित्र के समान सहायक होता है; बिना संचय के कोई सहारा नहीं रहता। इसीलिए संस्कृत में कहा गया है-'संचितं हि भवेद् वित्तं विपत्तौ मित्रवत सदा। असंचितस्य लोकेऽस्मिन्नास्ति कश्चित् सहायः॥' लेकिन आज का व्यक्ति हरदम, हर पल पदार्थ में रचा-बसा नजर आता है।वह ज्यादा से ज्यादा संचय कर लेना चाहता है, आवश्यकता से बहुत अधिक संचय। थोड़ा-थोड़ा संचय करना ठीक है।इस संबंध में, संचय ग़र करना ही है तो व्यक्ति को मधुमक्खी से शिक्षा (थोड़ा-थोड़ा संचय) की शिक्षा लेनी चाहिए।जैसे मधुमक्खी प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा मधु संचित करती है, वैसे ही बुद्धिमान व्यक्ति नियमित रूप से संचय करता है। बड़े खूबसूरत शब्दों में कहा गया है-'यथा मधुकरो नित्यं मधु संगृह्य गच्छति।तथा बुद्धिमान नित्यं अल्पमल्पं संचिनोति॥' कहना ग़लत नहीं होगा कि आदमी की संचय करने के पीछे आने वाले कल की सोच निहित होती है। कहते हैं कि जिसने पहले से संचय कर लिया, उसे भविष्य का शोक नहीं होता। संस्कृत में कहा गया है कि-'न हि भविष्यतः शोकः कृतसंचयमेव हि।बुद्धिमान्स भविष्याय पूर्वमेव संचिनोति॥' हालांकि, इसके विपरीत प्रकृति हमें बिल्कुल भिन्न संदेश देती है। पक्षियों के जीवन को देखें। वे कभी संचय नहीं करते। न उनके पास गोदाम होते हैं, न तिजोरियाँ। हर सुबह वे खुले आकाश में निकल पड़ते हैं-नई खोज, नए दाने और नए अनुभव की तलाश में। उन्हें यह चिंता नहीं सताती कि कल क्या होगा या परसों क्या मिलेगा। वे जानते हैं कि आज का दिन आज के लिए है। शाम होते-होते, दिन भर की उड़ान और संघर्ष के बाद, वे अपने छोटे-से घोंसलों में लौट आते हैं और शांति से विश्राम करते हैं। उनका घोंसला भी संग्रह का स्थान नहीं, बल्कि विश्राम और सुरक्षा का प्रतीक होता है। वास्तव में, पक्षियों का यह जीवन हमें यह सिखाता है कि विश्वास और संतोष कितने महत्वपूर्ण हैं। वे प्रकृति पर भरोसा करते हैं और अपने श्रम पर भी। उन्हें भविष्य की अनिश्चितता डराती नहीं, क्योंकि वे वर्तमान में पूरी निष्ठा से जीते हैं। अगली सुबह फिर वही उल्लास, वही चहचहाहट और वही नई शुरुआत होती है। उनके जीवन में भय कम और स्वतंत्रता अधिक होती है।मनुष्य यदि चाहे तो पक्षियों से बहुत कुछ सीख सकता है। संचय आवश्यक है, परंतु सीमा में। आवश्यकता और लालच के बीच का अंतर समझना ही जीवन की परिपक्वता है। जब संचय ही जीवन का लक्ष्य बन जाता है, तब आनंद, प्रेम और शांति पीछे छूट जाते हैं। मनुष्य स्वयं द्वारा बनाए गए भंडार का रक्षक बनकर रह जाता है, जबकि जीवन उससे कहीं अधिक विशाल और प्रवाहमय है। सच्चा सुख अधिक जमा करने में नहीं, बल्कि कम में संतोष ढूँढने में है। पक्षियों की तरह हर दिन को एक नई यात्रा मानकर, पूरे मन से जीना ही जीवन की सार्थकता है। आज का श्रम, आज का आनंद और शाम का विश्राम-यही जीवन की सरल, सुंदर और संतुलित लय है। यदि मनुष्य इस लय को समझ ले, तो उसका जीवन भी हल्का, मुक्त और आनंदपूर्ण हो सकता है। अंत में निष्कर्ष के तौर पर यही कहूंगा कि संचय जीवन में सुरक्षा और भविष्य की स्थिरता देता है, इसलिए यह आवश्यक है। लेकिन जब संचय आवश्यकता से अधिक होकर लोभ, संसाधनों की बर्बादी या दूसरों के अभाव का कारण बन जाए, तो वह अनुचित हो जाता है। अतः संतुलित और उद्देश्यपूर्ण संचय ही उचित माना जाना चाहिए।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड

जन्म 23 जनवरी, 1897 : सुभाष चन्द्र बोस : जिनके नाम से अंग्रेजों के हृदय कांपते थे

प्रमोद दीक्षित मलय

ब्रिटिश शासन सत्ता की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता की मुक्ति के लिए हुए स्वाधीनता समर की बलिवेदी पर वीर सपूतों ने निज जीवन की आहुति दी है। अपने सुवासित जीवन-पुष्पों की माला से भारत माता का कंठ सुशोभित किया है तो रुधिर से भाल पर अभिषेक भी। उन्हीं जननायकों में से एक महानायक बनकर उभरा जिसे विश्व सुभाष चन्द्र बोस के नाम से जानता है। सुभाष का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक में प्रतिष्ठित वकील जानकी नाथ बोस एवं प्रभावती के कुल में हुआ था। 1919 में बी.ए. आनर्स प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर कलकत्ता विश्वविद्यालय में दूसरा स्थान प्राप्त किया। विवेकानन्द साहित्य के अध्ययन ने उनको राष्ट्रीय चेतना से समृद्ध किया और चिंतन-मनन करने की सुदृढ जमीन दी। पुत्र को आईसीएस बनाने की पिता की इच्छा का मान रखते हुए सुभाष 1919 में इंगलैण्ड के लिए रवाना हुए और आईसीएस परीक्षा न केवल उत्तीर्ण की बल्कि चौथा स्थान भी हासिल किया किन्तु हृदय में धधक रही देशप्रेम की ज्वाला के कारण अंग्रेजों की चाकरी को स्वीकार न कर भारत माता की सेवा-साधना का कंटकाकीर्ण पथ अंगीकार किया। फलतः सेवा से त्यागपत्र देकर जून 1921 में भारत वापस आकर कांग्रेस में महात्मा गांधी के सुझाव पर सुभाष जी कलकत्ता जाकर देशबंधु चितरंजन दास के साथ काम करने लगे।

चितरंजन दास का उस समय बंगाल में बहुत प्रभाव था और आम जन में उनकी छवि एक उत्कृष्ट नेता की थी। दास ने कांग्रेस के अंदर ही 'स्वराज्य दल' बनाकर कलकत्ता महापालिका का चुनाव लड़ा और जीत अर्जित कर महापौर बने। तब उन्होंने सुभाष को महापालिका का मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनाया। यह सुभाष के सार्वजनिक जीवन की शुरुआत थी। यहां पर सुभाष ने अपनी कार्यशैली और दूरदृष्टि का परिचय देकर काफी नये और महत्वपूर्ण काम किए जिससे उनकी कार्यशैली और राजनीतिक सोच से सभी परिचित हुए और उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। साथ ही उनकी गिनती देश के अग्रणी नेताओं में होने लगी। उनके जीवन में समय पालन, लक्ष्य के प्रति समर्पण और अनुशासन का बहुत प्रभाव रहा जिसकी पृष्ठभूमि में विद्यार्थी जीवन में ही टेरीटोरियल आर्मी में रंगरूट के रूप में प्राप्त सैन्य प्रशिक्षण था। 1929 में कांग्रेस के अधिवेशन में सुभाष खाकी सैन्य गणवेश में उपथित होकर अध्यक्ष मोतीलाल नेहरु को सलामी दी। और आगे चलकर यही सैन्य अनुशासन 'आजाद हिन्द फौज' के गठन का दृढ आधार भी बना।

1933 से 1936 तक स्वास्थ्य लाभ के लिए यूरोप प्रवास के दौरान आपने इटली के नेता मुसोलिनी और आयरलैण्ड के नेता डी. बलेरा से भेंट-विमर्श कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए सहयोग का वचन लिया। इसी दौरान आसट्रिया में निजी टाईपिस्ट एमिली शेंकेल की सेवा, समझ और भारत के प्रति उदात्त सोच से प्रभावित हो सुभाष ने उनसे विवाह कर लिया। वह भारत वापस आये। देश में सुभाष की लोकप्रियता उफान पर थी। 1938 में हरिपुरा में आयोजित कांग्रेस के 51वें अधिवेशन में गांधी जी ने सुभाषबाबू को अध्यक्ष मनोनीत किया और सम्मान में 51 बैलों द्वारा इनके रथ को खींचा गया। उस अवसर पर अध्यक्ष के रूप में दिया गया सुभाष का ओजस्वी भाषण दुनिया के प्रमुख भाषणों में शुमार किया जाता है। अध्यक्षीय कार्यकाल में आपने जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में 'योजना आयोग' और विख्यात अभियंता विश्वेश्वरैया के नेतृत्व में 'विज्ञान परिषद' बनाई।

कांग्रेस में सुभाष के बढ़ते प्रभाव और कार्यकर्ताओं पर मजबूत होती पकड़ से कांग्रेस के अन्दर ही कुछ नेताओं का प्रभामंडल कमजोर होने लगा और वे सुभाष को कमजोर करने की चालें चलने लगें। गांधी जी से भी मतभेद हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि 1939 के त्रिपुरा अधिवेशन में अध्यक्ष के मनोनयन की परम्परा के उलट कांग्रेस को चुनाव करवाना पड़ा। देश और कार्यकर्ताओं की पसंद सुभाष ने गांधी जी के समर्थित प्रत्याशी पट्टाभि सीतारमैया को पराजित कर दिया। जिस पर गांधी जी की टिप्पणी, ''सीतारमैया की हार मेरी हार है,'' से सुभाष बहुत व्यथित हुए क्योंकि उनके मन में गांधी जी के प्रति असीम आदर भाव था। देश जानता है कि विदेश प्रवास के दौरान सुभाष ने ही अपने एक रेडियो भाषण में गांधी जी को सर्वप्रथम 'राष्ट्रपिता' कहकर सम्बोधित किया था लेकिन मतभेद शान्त होने की जगह बढ़ता गया। गांधी जी के कहने पर कार्यकारिणी के 15 पदाधिकारियों में से दो को छोड़कर शेष ने त्यागपत्र दे दिया तो दल की एकता और देश की मजबूती के लिए सुभाष ने विवश होकर अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया और कांग्रेस के अन्दर ही 'फारवर्ड ब्लॉक' बनाकर काम करने लगे लेकिन उन्हें कांग्रेस से निकाल दिया गया। अंग्रेजी शासन ने उनको घर पर नजरबन्द कर दिया पर सुभाष तो दूसरी ही मिट्टी के बने थे, उन्हें कैद रखना अंग्रेजों के लिए आसान न था।

जनवरी 1941 में अपने घर पर नजरबंदी के दौरान ही ब्रिटिश पुलिस और जासूसों को चकमा देकर एक पठान के रूप में सुभाष निकल भागे और पेशावर, काबुल, मास्कों होते हुए जर्मनी पहुंचे। हिटलर एवं जर्मनी के अन्य नेताओं से भेंट कर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग का वचन प्राप्त किया और वहीं 'आजाद हिन्द रेडियो' की स्थापना की। वहां से आप जापान पहुंच कर जनरल तोजो से भेंट की और जापानी संसद को सम्बोधित किया। जापान के सहयोग से रासबिहारी बोस के मार्गदर्शन में 'आजाद हिन्द फौज' का गठन कर सिपाहियों और नागरिकों का आह्वान किया कि 'तुम मूझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा'। 5 जुलाई, 1943 को सिंगापुर में टाउन हॉल के सामने आजाद हिन्द फौज के वीर सिपाहियों के सम्मुख ओजस्वी भाषण देते हुए 'दिल्ली चलो' का नारा दिया था जिसे प्रत्येक सिपाही ने हृदय से स्वीकार कर बर्मा (अब म्यांमार), कोहिमा, इम्फाल के मोर्चे पर अंग्रेजी सेना से मुकाबला कर दुश्मनों के दांत खट्टे कर दिए। 21 अक्टूबर, 1943 को सुभाष ने आजाद हिन्दुस्तान की अंतरिम सरकार बनाई जिसमें राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और युद्धमंत्री का दायित्व स्वयं निर्वहन किया। इस आजाद हिन्द सरकार को जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली, आयरलैण्ड आदि 9 देशों ने मान्यता प्रदान की थी। और जापान सरकार द्वारा अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह सुभाषबाबू की उस अस्थायी सरकार को भेंट किए गये थे जिसे सुभाष ने 'शहीद' और 'स्वराज्य' नाम दे अमर कर दिया। उस अस्थायी सरकार के गठन के 75 वर्ष पूर्ण होने के सुअवसर पर अक्टूबर 2018 में भारत के प्रधानमंत्री मा0 नरेन्द्र मोदी द्वारा लालकिले पर तिरंगा ध्वज फहराकर उसके महत्व को रेखांकित किया गया।

गणतंत्र दिवस परेड पर सवाल क्यों

डा. विनोद बब्बर

भारत उत्सवधर्मी देश हैं। जश्न-ए-जमहूरियत यानि गणतंत्र दिवस पर राजपथ पर शानदार परेड, झांकियां, फ्लाईंग-पास्ट होता है। जब इसे धूमधाम से मनाने तथा भारत रत्न सरीखे सम्मानों के औचित्य पर चर्चा होती है, तो पक्ष-विपक्ष के सटीक तर्क-वितर्क का पिटारा खुल जाता है। कुछ लोगों द्वारा हर पुरानी प्रथा को गलत, बेकार और धन की बर्बादी कह कर उसे समाप्त करने की मांग करना एक फैशन-सा बनता जा रहा है। पुरानी रूढ़ियाँ, अंधविश्वास और सामाजिक जकड़न पैदा करने वाली कुरीतियां निश्चित रूप से समाप्त होनी चाहिएँ, साथ-ही-साथ दिन-प्रतिदिन पैसे का नंगा प्रदर्शन करने वाले विशाल शादी पार्टी कार्यक्रमों का विरोध भी होना चाहिए। दहेज प्रथा, बाल-विवाह, छुआछूत, नशे आदि के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए, दोषियों को कानून से भी अधिक समाज दंडित कर सकता है। ऐसे तत्वों का संपूर्ण सामाजिक बहिष्कार होना चाहिएं। हमारा मत है कि सभी पुरानी प्रथाएँ गलत नहीं है और न ही सभी ठीक। गलत का त्याग हो, लेकिन मात्र विरोध के नाम पर देश के गौरव को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। ऐसा ही एक ज्वलंत प्रश्न है कि क्या गणतंत्र दिवस अर्थात् 26 जनवरी को राजपथ पर होने वाली परेड बेकार है? क्या उसे बन्द कर देना चाहिए? जैसा-कि कुछ आधुनिक विचारधारा के लोग कह रहे हैं। हमारा मत है 'नहीं, हर्गिज नहीं।

किसी भी स्वाभिमानी राष्ट्र का अपना सौंदर्यबोध और शक्तिबोध होता है। देश के विकास की तस्वीर, सांस्कृतिक कार्यक्रम और राज्यों की झांकियां हमारा सौंदर्यबोध है जबकि सेना, अनुशासन, आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्र और वायुसेना का शानदार फ्लाइंग पास्ट हमारे शक्तिबोध का प्रतीक ही तो है। इससे राष्ट्र में आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान की भावना का संचार होता है। आत्मविश्वास की कमी ही महाभारत युद्ध में महारथी कर्ण की पराजय का कारण बनी थी, जबकि भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन में आत्मविश्वास की भावना का संचार कर उसे विजय भी दिलवाई थी।

अस्त्र-शस्त्र के प्रदर्शन का उद्देश्य किसी को भयभीत करना नहीं है क्योंकि हमारा दर्शन सदा से ही न भय काहू को देत और न भय काहू का मानत' रहा है यह शक्तिबोध तो राष्ट्र के 'गण' को 'तंत्र' की ओर से आश्वस्त करना भर है। यदि इस खर्च को धन की बर्बादी कहा जाएगा तो कल देश की सीमाओं की रक्षा पर होने वाले खर्च का भी प्रश्न उठ सकता है। तब तो कुछ भी कर पाना संभव नहीं होगा। हर खर्च का मूल्यांकन मूल्य के साथ-साथ महत्व से भी किया जाता है। क्या गणतंत्र दिवस न मनाने से भ्रष्टाचार और सामाजिक बुराईयां दूर हो जाएंगी? नहीं, कदापि नहीं। बल्कि, रही-सही राजनैतिक चेतना भी समाप्त हो जाएगी। अपनी गलतियों का प्रायश्चित करने की बजाय गणतंत्र दिवस परेड की बलि देना अविवेकपूर्ण हैं। यूँ-भी गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेना हर जवान के लिए गौरव की बात है, गौरव के उस क्षण को प्राप्त करने के लिए हमारे बहादुर बच्चे, सेना के जवान जी-तोड़ मेहनत करते हैं। बहादुर बच्चे जब हाथी पर बैठकर राजपथ से निकलते हैं, तो सभी को रोमांच होता है। यह रोमांच प्रेरणा उत्पन्न करता है- कुछ कर दिखाने की। आज हम अपना राष्ट्रगान भूल रहे हैं, राष्ट्र-गीत वन्देमातरम्-तो भूल ही चुके हैं क्योंकि इसके गायन के अवसर घटते जा रहे हैं। यदि गणतंत्र दिवस परेड भी बंद कर दी जाए, तो लोग जल्द ही इसके महत्व को भूल बैठेंगे, विशेषरूप से हमारी युवा पीढ़ी कैसे जानेगी, क्या होता है गणतंत्र दिवस? और क्यों होता है यह सब? सभी पुरानी प्रथाओं का विरोध करने से पहले उसके गुण-दोषों पर विचार अवश्य करें। पुराने माता-पिता, दादा-दादी का घटता सम्मान कहीं ऐसे विरोधों का नतीजा तो नहीं है?

हाँ, भारत स्वतंत्र है, लोकतंत्र है और गणतंत्र भी पर, तंत्र जिस रफ्तार से फल फूल रहा है उस अनुपात में गण काफी पिछडा हुआ है। कुछ समय पूर्व गणतंत्र के मुखिया का वेतन दुगुना कर दिया गया, लोकतंत्र के पहरेदार जब चाहें, अपनी आय-सुविधाएं और पेंशन बढ़ा लेते हैं। एक प्रदेश की मुखिया अपनी सुरक्षा के लिए नियमों की सीमा को भी पार करना चाहती है। यह तो एक बानगी भर है, देश के सभी राज्यों में कमोबेश स्थिति एक-जैसी है। इतना ही क्यों, कुछ पूंजीपति घराने तो आसमान की बुलंदियों को छू रहे हैं। पर देश के आम आदमी की स्थिति कुछ दूसरी ही तस्वीर प्रस्तुत करती है। यहाँ गरीबों की चिंता करने वालों के शासन में किसानों-मजदूरों पर गोली चलती है, कर्ज से दबा किसान आत्महत्या करता है, कानूनी रोक के बावजूद, बाल मजदूरी जारी है, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ग्राफ निरंतर गिर रहा है। ऐसे में भी यदि हम इसी तंत्र के किसी व्यक्ति को भारत-रत्न घोषित करें तो अभाव से बेबस 'गण' को कुछ समझ नहीं आता कि वह कहाँ जाकर अपना सिर फोड़े?

15 अगस्त, 1947 को मिली आजादी और 26 जनवरी, 1950 को घोषित हुए गणतंत्र के इतने वर्षों बाद भी भारत-पुत्रों की उपेक्षा जारी है, देश में भी और विदेश में भी। हम भारत-पुत्रों पर होने वाले अत्याचारों पर आवाज उठाने की नैतिक शक्ति खो रहे हैं, क्योंकि निज भूमि पर भी हमें भारत- रत्नों की चिंता ज्यादा है। भारत-पुत्र तो जैसे हमारे एजेंडे में ही नहीं हैं। वास्तव में, खून जमा देने वाली सर्दी में सीमाओं की रक्षा करने वाले जवान हों या अपने खून-पसीने से माटी को सींचकर देश का पेट भरने वाले किसान, वही सच्चे भारत-रत्न हैं पर यह तंत्र उन्हें तो भारत-पुत्र-सा दुलार और अधिकार देने को तैयार नहीं है। एक नहीं, सभी दलों के भारत-पुत्रों से ज्यादा अपने पितृपुरूषों के सम्मान की पड़ी है। भाजपा ने अटल जी को भारत-रत्न सम्मान देने की मांग क्या रखी कि शुरू हो गया भारत रत्न के लिए दावेदारी का अंतहीन सिलसिला। सभी दलों के नेता सम्मानित व्यक्ति हैं, लाखों लोगों के चहेते भी। पर शानदार इमारत के सजावटी पत्थर ही पूजे जाते रहेंगे, नींव के खामोश पत्थरों की पूछ आखिर कब होगी? अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के जीवन में जब तक प्रगति की बयार नहीं पहुँचती तब तक देश का मस्तक शान से ऊंचा नहीं होगा।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर हमें देश को भय, भूख, बेरोजगारी, आतंक, राजनैतिक तिकड़मबाजी के कारण समाज को जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र के नाम पर बाँटने की कोशिश के प्रति सजग रहने का संकल्प लेना चाहिए। गणतंत्र के गनतंत्र बनाने की कोशिश में लगे देश के दुश्मनों को कुचलने की तैयारी करनी चाहिएं, वरना हमारी समस्त झांकियाँ, शस्त्र-प्रदर्शन एक कर्मकांड बनकर, जो देश को समान कानून, समान व्यवहार और समान समृद्धि उपलब्ध करवाने में असफल रहे नेताओं के लिए भारत-रत्न सरीखे सम्मान बटोरने की कोशिश तक सिमट जाएगा।

डॉक्टर पर हमले के बाद कैपिटल हॉस्पिटल में सुरक्षा बढ़ा दी गई

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : कैपिटल हॉस्पिटल में डॉक्टर पर हमले के बाद कमिश्नरेट पुलिस एक्शन मोड में है। डॉक्टर की सुरक्षा के लिए कैपिटल हॉस्पिटल में फोर्स बढ़ा दी गई है। हॉस्पिटल में और फोर्स तैनात करने के साथ ही पुलिस स्टेशन ऑफिसर पूरी रात हॉस्पिटल में पेट्रोलिंग कर रहे हैं। कुछ दिन पहले जूनियर डॉक्टर्स एसोसिएशन ने भुवनेश्वर DCP को डॉक्टर पर हमले की जानकारी दी थी और सुरक्षा की मांग की थी।जानकारी के मुताबिक, कैपिटल हॉस्पिटल में काम करने वाले डॉक्टर जन्मेजय मिश्रा पर हमला हुआ। हमलावरों में से एक को गिरफ्तार कर लिया गया, जबकि दूसरा अभी भी फरार है। डॉक्टर विरोध में काले बैज पहनकर मरीजों की सेवा कर रहे थे।

दूसरी ओर, हेल्थ सेक्रेटरी डॉक्टर के पक्ष में आगे आए। कैपिटल हॉस्पिटल में डॉक्टरों पर बार-बार हमला हो रहा है। काम करने वाले डॉक्टर पर हमले के बाद वे सुरक्षा की मांग कर रहे हैं। जूनियर डॉक्टर्स एसोसिएशन ने कहा कि ऐसे माहौल में ड्यूटी करना नामुमकिन है। डॉक्टर्स एसोसिएशन ने मांग की है कि डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए अलग-अलग डिपार्टमेंट में पुलिस फोर्स तैनात की जाए। जूनियर डॉक्टर्स एसोसिएशन ने काले बैज पहनकर अपनी ड्यूटी की।

एसोसिएशन ने कहा कि अगर सरकार नहीं सुनती है तो बड़ा आंदोलन होगा। हेल्थ सेक्रेटरी हालात को समझने के लिए कैपिटल हॉस्पिटल पहुंचे। उन्होंने डॉक्टरों समेत कैपिटल हॉस्पिटल के अधिकारियों से बातचीत की। हेल्थ सेक्रेटरी ने कहा कि डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए सभी कदम उठाए जाएंगे। दूसरी ओर, DCP ने कहा कि डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए इंतजाम किए गए हैं। काम करने वाले डॉक्टर पर हमले की यह पहली घटना नहीं है। राज्य के अलग-अलग अस्पतालों में डॉक्टरों को गुस्से का सामना करना पड़ रहा है। जूनियर डॉक्टर्स एसोसिएशन ने सेक्रेटरी से रिक्वेस्ट की थी कि राज्य सरकार डॉक्टरों की सुरक्षा पर ध्यान दे।

राजधानी के हाट नंबर 1 में लगी भीषण आग से करीब 1 करोड़ रुपये की संपत्ति जलकर राख

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राजधानी भूबनेश्वर के बीचों-बीच भयानक आग लग गई। यूनिट-1 या नंबर 1 हाट में लगी आग में 25 से ज़्यादा दुकानें जलकर खाक हो गई हैं। करीब एक करोड़ रुपये की प्रॉपर्टी जलकर राख हो गई है। देर रात करीब 1 बजे कैपिटल पुलिस स्टेशन के बगल में मौजूद यूनिट-1 हाट की एक दुकान में आग लग गई। आग ने भयानक रूप ले लिया था। इससे पहले कि किसी को पता चलता, एक के बाद एक दुकानें आग की लपटों में जल रही थीं। आग में करीब 25 दुकानें जलकर खाक हो गईं। आग बुझाने के लिए सेंट्रल स्ट्राइक फोर्स के साथ सिमलाप, तमांडो, सेक्रेटेरिएट, चंद्रशेखरपुर, बालीपटना और पहल की फायर ब्रिगेड मौके पर पहुंचीं और आग बुझाने की पूरी कोशिश की। इस बीच, एक प्लास्टिक की दुकान में आग लग गई, जिससे फायर ब्रिगेड को बचाव के लिए आना पड़ा। करीब 20 फीट ऊंची आग को जलता देख स्थानीय लोग, दुकानें बंद कर घर जा रहे दुकानदार और कैपिटल पुलिस स्टेशन के लोग हैरान रह गए। आग इतनी भयंकर थी कि उसे बुझाने आए 70 से ज़्यादा फायरफाइटर मार्केट में अंदर नहीं जा सके। करीब एक करोड़ रुपये की प्रॉपर्टी जलकर राख हो गई। हालांकि, इतनी बड़ी आग कैसे लगी, इसका कारण साफ नहीं है। जानकारी के मुताबिक, कैपिटल पुलिस स्टेशन के पास भुवनेश्वर नंबर 1 मार्केट के वेंडिंग जोन और एक प्लास्टिक की दुकान में आग लग गई। एक दुकान में लगी आग दूसरी दुकान में फैल गई।

ऊर्जा के उत्पादन, उपभोग और सतत विकास पर वैश्विक साझेदारी में झारखंड का संवाद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की बैठक के दूसरे दिन झारखण्ड ने ऊर्जा के उत्पादन, उपभोग और सतत विकास और क्षेत्रीय नेतृत्व से जुड़े वैश्विक संवादों में मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के नेतृत्व में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय नीति निर्माताओं, निवेशकों और वैश्विक संगठनों के साथ कई महत्वपूर्ण चर्चाओं में भाग लिया।

मुख्यमंत्री का इंटर-मिनिस्टीरियल डायलॉग में संबोधन विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। इस सत्र में स्लोवाकिया के पूर्व वित्त एवं अर्थव्यवस्था मंत्री वाजिल हुडाक सहित अनेक वैश्विक नेताओं ने भाग लिया। चर्चा का मुख्य विषय सतत और समावेशी आर्थिक विकास के लिए वैश्विक सहयोग ढांचे को सुदृढ़ करना रहा। संवाद के दौरान नवीकरणीय ऊर्जा, भारी वाहन निर्माण में निवेश की संभावनाओं और बागवानी क्षेत्र में टिकाऊ पद्धतियों को अपनाने जैसे विषयों पर भी गहन विचार-विमर्श हुआ। मुख्यमंत्री ने "कैपिटल इन एक्शनः स्केलिंग एनर्जी सिस्टम्स थ्रू पॉलिसी, फाइनेंस एंड रीजनल लीडरशिप" विषयक चर्चा में भी भाग लिया। इस चर्चा में स्वच्छ ऊर्जा प्रणालियों के विस्तार, नवाचार आधारित वित्तपोषण और प्रभावी नीतिगत समन्वय की आवश्यकता पर जोर दिया गया। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि वैश्विक स्तर पर तय जलवायु और स्थिरता लक्ष्यों को जमीनी स्तर पर लागू करने में राज्यों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने झारखंड द्वारा औद्योगिक विकास को पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ संतुलित करने, रोजगार सृजन को बढ़ावा देने और क्षेत्रीय आर्थिक मजबूती को सुदृढ़ करने के प्रयासों को प्रमुखता से रेखांकित किया।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के दूसरे दिन झारखण्ड की यह सक्रिय भागीदारी राज्य की स्वच्छ ऊर्जा, सतत औद्योगिकीकरण और समावेशी विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। वैश्विक मंचों पर निरंतर संवाद और साझेदारी के माध्यम से झारखण्ड भविष्य-उन्मुख, संतुलित और टिकाऊ विकास की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ रहा है।

सांसद औजला से मिलने पहुंचे एनिमल वेलफेयर एंड केयर सर्विसेज (AWCS) की संस्थापक

अमृतसर 20 जनवरी (साहिल बेरी)

एनिमल वेलफेयर एंड केयर सर्विसेज (AWCS) की संस्थापक की डॉ. नवनीत कौर सांसद गुरजीत सिंह औजला से मिलने पहुंची। उन्होंने जानवरों की भलाई के लिए किए जा रहे कार्यों पर चर्चा की ओर सहयोग की मांग की।

डॉ नवनीत कौर ने बताया कि एनिमल वेलफेयर एंड केयर सर्विसेज (AWCS) आवारा कुत्तों को न केवल मुफ्त चिकित्सा उपचार प्रदान करने के लिए काम कर रही हैं, बल्कि वैज्ञानिक जनसंख्या नियंत्रण (Animal Birth Control - ABC) के माध्यम से मानव-कुत्ता संघर्ष को सुलझाने की दिशा में भी प्रयासरत हैं।

उन्होंने सांसद औजला से मांग की कि स्थानीय सरकार और नगर निगमों से उन्हें सहयोग दिलाएं या तो नसबंदी (स्टरलाइजेशन) की प्रक्रिया में तेजी लाएं या AWCS को संस्थागत सहायता प्रदान करें, ताकि जमीन पर इस अभियान को मानवीय और प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके।

सांसद औजला ने मुद्दे के दोनों पक्षों को धैर्यपूर्वक सुना। उन्होंने कहा कि वो इस बात पर सहमत हैं कि कुत्तों की आबादी को नियंत्रित करना आवश्यक है, लेकिन इसे मानवीय, वैज्ञानिक और नीति-आधारित तरीके से किया जाना चाहिए। जन स्वास्थ्य और सार्वजनिक सुरक्षा की रक्षा करते हुए मानव-कुत्ता संघर्ष को हल करने का यही एकमात्र स्थायी तरीका है।"

उन्होंने दोहराया कि दंडात्मक दृष्टिकोण और केवल समस्या आने पर प्रतिक्रिया देने वाले उपाय (reactive measures) इस समस्या का समाधान नहीं हैं। लंबे समाधान के लिए जवाबदेही, विज्ञान आधारित नीति और ABC कार्यक्रमों का उचित कार्यान्वयन अत्यंत आवश्यक है।

सरायकेला जिले में अवैध खदान सहित 6 क्रशर जप्त, प्राथमिकी दर्ज

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , उपायुक्त निर्देशानुसार जिला खनन पदाधिकारी ज्योति शंकर सतपथी, क्षेत्रीय पदाधिकारी (प्रदूषण) तथा अंचलाधिकारी, चांडिल के नेतृत्व में जिला खनन विभाग एवं स्थानीय चांडिल थाना पुलिस के संयुक्त तत्वावधान में चांडिल थाना अंतर्गत मौजा चिल्गु एवं मौजा करनीडीह में अवैध पत्थर उत्खनन, परिवहन व भंडारण के विरुद्ध औचक निरीक्षण अभियान संचालित किया गया।

निरीक्षण के क्रम में मौजा चिलगु में एक अवैध पत्थर खदान पाई गई तथा इसके आसपास 6 अवैध क्रशर इकाइयां स्थापित पाई गईं। अवैध खदान एवं क्रशर इकाइयों में उत्खनित व भंडारित पत्थर खनिज को विधिवत जप्त कर स्थानीय चांडिल पुलिस को सुपुर्द किया गया।

इस प्रकरण में अवैध खदान एवं अवैध क्रशर इकाइयों के भूमि स्वामी तथा संलिप्त व्यक्तियों के विरुद्ध चांडिल थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई है। साथ ही प्रदूषण विभाग द्वारा भी इन अवैध इकाइयों के विरुद्ध संबंधित अधिनियमों नियमों के तहत विभागीय कार्रवाई की जा रही है।

इसके अतिरिक्त, उक्त क्षेत्र में स्थापित 5 भट्टा इकाइयों का भी निरीक्षण किया गया, जिसमें 3 भट्टे संचालित एवं 2 बंद पाए गए। संचालित इकाइयों से खनन विभाग द्वारा नियमानुसार जुर्माना वसूला गया है, जबकि प्रदूषण विभाग द्वारा संचालित इकाइयों के विरुद्ध विधिसम्मत कार्रवाई जारी है।

इस सम्बन्ध मे उपायुक्त नितिश कुमार सिंह ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि जिले के किसी भी क्षेत्र में खनिजों के अवैध उत्खनन, भंडारण अथवा परिवहन को किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस प्रकार की अवैध गतिविधियों में संलिप्त पाए जाने पर कठोर विधिसम्मत कार्रवाई, संपत्ति की जप्ती एवं दंडात्मक प्रावधानों के अंतर्गत कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

जिला खनन पदाधिकारी ने कहा कि अवैध खनन पर प्रभावी रोकथाम हेतु संयुक्त निरीक्षण एवं प्रवर्तन अभियान निरंतर जारी रहेगा। नियमों का उल्लंघन करने वाली खदानों के विरुद्ध शून्य-सहिष्णुता नीति के तहत कार्रवाई की जाएगी तथा दोषियों को किसी भी स्तर पर राहत नहीं दी जाएगी।

फिक्की फ्लो ने 'डेयर टू ड्रीम' के साथ मनाया पुनर्निर्माण का जश्न, चेयरपर्सन मोना सिंह के नेतृत्व में महिलाओं को मिला नया मंच

अमृतसर 20 जनवरी (साहिल बेरी)

फिक्की फ्लो ने वर्ष 2026 – ईयर ऑफ इन्फिनिटी के अंतर्गत अपनी चेयरपर्सन श्रीमती मोना सिंह के सशक्त नेतृत्व में "डेयर टू ड्रीम" नामक एक प्रेरणादायक और उद्देश्यपूर्ण संध्या का आयोजन किया। यह कार्यक्रम उन महिलाओं को समर्पित रहा, जिन्होंने जीवन के उत्तरार्ध में व्यक्तिगत और पेशेवर स्तर पर फिर से शुरुआत करने का साहस दिखाया और समाज की तय धारणाओं को चुनौती दी।

यह आयोजन फिक्की फ्लो की उस प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जो जिम्मेदारियों के बाद उभरने वाले साहस और दोबारा जागती महत्वाकांक्षाओं को सम्मान देने में विश्वास रखती है। "डेयर टू ड्रीम" के माध्यम से उन फ्लो सदस्यों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने परिवार और देखभाल की प्राथमिकताओं के वर्षों के बाद उद्यमिता, प्रोफेशनल करियर और अपने परिभाषित सफलता पथ को चुना।

इस अवसर पर चेयरपर्सन मोना सिंह ने कहा, "डेयर टू ड्रीम केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह याद दिलाने वाला संदेश है कि महिलाएं समय या जिम्मेदारियों के साथ अपने सपने नहीं खोतीं। वे बस सही क्षण का इंतजार करती हैं। फ्लो में हम हर उस महिला का उत्सव मनाते हैं, जो जीवन के किसी भी पड़ाव पर खुद को फिर से चुनती है।"

कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई मिसेज यूनिवर्स 2025 और यह प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय खिताब जीतने वाली पहली भारतीय महिला, शैरी सिंह ने। उनकी उपलब्धि ने वैश्विक सौंदर्य प्रतियोगिताओं में एक नया इतिहास रचा है और यह सिद्ध किया है कि सपनों की कोई समय-सीमा नहीं होती। उन्होंने कहा, "मिसेज यूनिवर्स जीतना सिर्फ ताज की बात नहीं थी, यह साहस, अनुशासन और इस विश्वास का प्रतीक है कि सपने कभी समाप्त नहीं होते।"

शाम का मुख्य आकर्षण मोना सिंह और शैरी सिंह के बीच हुआ संवाद रहा, जिसमें आत्मविश्वास, पुनर्निर्माण और आंतरिक दृढ़ता जैसे विषयों पर गहन चर्चा हुई। इसी अवसर पर फ्लो एंथम "छुएंगे आसमान" का विमोचन भी किया गया, जिसे प्रसिद्ध गायिका हरगुन कौर ने स्वर दिया, गीत पंकज विज द्वारा लिखा व निर्देशित किया गया और कोरियोग्राफी प्रीति सिंह ने की। फ्लो सदस्याओं की भागीदारी से सजा यह गीत एकजुटता और सामूहिक आकांक्षाओं का प्रतीक बना।

कार्यक्रम में वूमन ऑफ वंडर (WOW) सम्मान के तहत उन फ्लो सदस्यों को भी सराहा गया, जिन्होंने जीवन में देर से नए सपनों को साकार किया। साथ ही श्रीमती गीतांजलि ओम प्रकाश को एजलेस वूमन एम्पावरमेंट, डॉ. सेहर ओम प्रकाश को चिकित्सा क्षेत्र में उत्कृष्टता और वैश्विक स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए तथा श्रीमती मोनिका उप्पल को शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन हेतु सम्मानित किया गया। फोर पॉइंट्स बाय शेरातन में आयोजित यह संध्या संवाद और सहयोग के साथ समाप्त हुई, जिसने फिक्की फ्लो को महिलाओं के लिए एक सशक्त, प्रेरक और पोषक मंच के रूप में फिर से स्थापित किया।

भजनों से किया आईमाता का गुणगान

जगदीश सीरवी

हैदराबाद बालाजी नगर स्थित श्री आईमाता मन्दिर में माही बीज उत्सव मनाया गया। जागरण का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर आईमाताजी की आरती की गई। एक शाम आई माता जी के नाम रात्रि जागरण में भजन गायक चेतन नाथ एंड पार्टी ने भजनों की प्रस्तुति देकर श्रंदालुओ को झूमने पर मजबूर कर दिया। दिन में महिलाओं ने आई माता के नाम भजनों की प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम में पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष जयराम पंवार, उपाध्यक्ष नारायणलाल बर्फा, सचिव हीरालाल चोयल, कोषाध्यक्ष नरेश सोलंकी, सह कोषाध्यक्ष सोहनलाल पंवार, घेवरचन्द्र चोयल, व समस्त कार्यकारणी व बन्धु महिला मंडल सहित अनेक गणमान्य मौजूद रहे।

जमशेदपुर में अपरेशन प्रहार के तहत नशीला ह्वाईटनर, डेनड्राईड, ब्राउन शुगर जप्त, छोटे बच्चे नशे की लत में

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला , झारखंड के जमशेदपुर में नशे के अवैध कारोबार करने वाले सिंडिकेट के खिलाफ पुलिस ने 'ऑपरेशन प्रहार' के तहत कार्रवाई की है। सोमवार को साकची, सिदगोड़ा और सोनारी थाना क्षेत्रों में हुई छापेमारी में भारी मात्रा में नशीला व्हाइटनर, डेंड्राइट और ब्राउन शुगर बरामद किया गया है। साकची के टीना शेड और मछली मार्केट इलाके में छोटे बच्चों को नशे की लत में डूबा देख स्थानीय युवाओं ने साहस दिखाया। युवाओं ने एक संदिग्ध बच्चे से पूछताछ की, जिसके बाद साकची पुलिस के साथ मिलकर 'जायसवाल बिल्डिंग'और अन्य ठिकानों पर धावा बोला गया। पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि भालूबासा टीओपी के पास एक जर्जर कंपनी क्वार्टर से मादक पदार्थों की सप्लाई हो रही है। एसएसपी के निर्देश पर डीएसपी भोला प्रसाद के नेतृत्व में गठित टीम ने छापेमारी कर राहुल शांडिल (बागुननगर) और प्रीति कुमारी (छायानगर) को गिरफ्तार किया। इनके पास से 100 पुड़िया ब्राउन शुगर और 5480 रुपये नकद बरामद किए गए। दोनों आरोपियों को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। सोनारी थाना पुलिस ने भी परदेशी पाड़ा स्थित एक मकान में छापेमारी कर श्याम ठाकुर नामक तस्कर को दबोचा। आरोपी किराए के कमरे में रुककर ब्राउन शुगर की छोटी पुड़िया बनाकर बेचता था। पुलिस ने उसके पास से 11 पुड़िया (1 ग्राम) ब्राउन शुगर जब्त की है। थाना प्रभारी मधुसूदन डे ने बताया कि पुलिस टीम को देखकर आरोपी ने भागने की कोशिश की, लेकिन उसे खदेड़कर पकड़ लिया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023